राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका ० विश्व स्नेह समाज ०

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः17, अंकः4 दिसम्बर 2017

आधुनिक भारतीय राष्ट्रीयता के निर्माताः पं० मदन मोहन मालवीय

आज फिल्मों और सीरियलों के निर्माता, जिनका मुख्य लक्ष्य पैसा कमाना है, साहित्यकारों को पैसा देकर ऐसा ही साहित्य लिखवा रहे हैं।

हिन्दी साहित्य और आज का समाज

इस अंक में......

- अंग्रेजी मानसिकता से मुक्त हों
- जीवनी का अर्थ एवं परिभाषा
- ममतामयी माँ

LFkk;h LrEHk

प्रेरक प्रसंग,

व्यंग्य-पाखंड

हिन्दीतर भाषी रचनाकार-ऊँ नमः शिवाय-विजय कुमार सप्पत्ति

संस्मरण-मेरी साहित्यिक यात्रा-डॉ० विनय मालवीय

कहानी-देवी-सुखवर्ष कंवर 'तन्हा', चींटी की सीख-वेद प्रकाश कंवर

कविताएं-जल हर पल-मनिहार सिंह निराला, आज का आदमी-के.एल. दीवान, परिवर्तन-सूरज तिवारी, भारत की धरती, सैनिक सम्मान-लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर', सूर्य से नजरे मिलाईये-जगन्नाथ विश्व, जन्मान्तर-श्रीकृष्ण अग्रवाल 'मंगल', दोहे- पं. मुकेश चतुर्वेदी 'समीर',

साहित्य समाचार, स्वास्थ्य,

धारावाहिक उपन्यासः निर्भया-अंकिता साहू,

स्वास्थ्यः सर्दियों में स्वस्थ रहने के खास सुझाव

लघु कथाएंः हौसला, रोटी, प्यास-शबनम शर्मा

ज्योतिषः २०१८ का राशिफल-पं० शम्भु नाथ मिश्रा

मुख्य संरक्षक

श्री बुद्धिसेन शर्मा

lj{kd lnL;

श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक

श्रीमती जया

foKkiu izc/kd

महेन्द्र कुमार अग्रवाल

C;jks

ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी

निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 dk0% 09335155949

b&ey%vsnehsamaj@rediffmail.com

lHkh in vorfud gS

पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।

प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

ukV%पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

iijd iilx

पपीहा! देख तो सही यह कैसा विरोधाभास है? जिसकी तू रट लगाए रहता है, जिसकी याद में गर्मी, लू, तपन की कोई परवाह नहीं करता, वहीं तेरा प्रेमी तुझ पर पत्थर बरपाता है. सोच तो तनिक प्रेम में यह कैसा दण्ड है? प्रेम का यह कैसा प्रतिकार है? नियति का यह कैसा विधान है?

बाज तू शक्तिमान है और शक्तिमान होना गौरव की बात है. फिर भी तू छीना झपटी, लूट खसोट मार काट करता रहता है. क्या शक्ति का यही सही उपयोग है? दीन हीन दलित वर्ग के पालक बनों, संहारक नहीं. शक्ति का वास्तविक उपयोग मझधार में डूबती नैया को बचाने में है, उसके डुबोने में नहीं है.

मयूर जिस पर तुम नाच उठे, वृद्ध क्षणिक, परिवर्तित तथा नश्वर है. वर्षा, ग्रीष्म, शरद सब काल चक्र के घेरे हैं. अधिकाधिक घमण्ड विनाश का प्रेरक है. समानता, एकरुपता, आनन्द के धोत है. क्षणिक वैभव में इठलाना ही मूर्खता है.

खंजन तेरा तिनको का निर्माण, तेरी साधना का प्रसाद, कब तक किसके लिए? चार दिन बाद तेरी कुटिया के द्वार रम जायगा कोई दूसरा मेहमान, फिर भी तू करेगा निर्माण, कोई दूसरा मेहमान, फिर भी तू करेगा निर्माण, कोई दूसरा निर्माण. निर्माण, निर्माण, निर्माण यही तो है तेरा उल्लास.

रे मन चल हंसो के उस देश जहां सत् असत की पहचान है. उस नगरी में बेसरा कर जहां कोई अपना न हो. इन परिचितों से तो अपरिचित भले हैं, जिनमें स्नेह, आदर तथा न्याय है. उनसे वे पक्षी भले हैं जिनमें ममता, दया, करुणा का संचार है. छद्म भेष में छिपे भेड़ियों से वास्तविक शेर-चीते अच्छे है.

📖 **दाउजी**

आधुनिक भारतीय राष्ट्रीयता के निर्माताः पं० मदन मोहन मालवीय

महात्मा गांधी ने उन्हें अपना बड़ा भाई कहा और ''भारत निर्माता'' की संज्ञा दी थी तथा पं० जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें एक ऐसी महान आत्मा कहा, जिन्होंने आधुनिक भारतीय राष्ट्रीयता की नींव रखी।

-डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

25 दिसम्बर 1861 को इलाहाबाद के एक ब्राह्मण परिवार में जन्में मदन मोहन मालवीय जी के पिता पंडित बैजनाथ और माता श्रीमती मीना देवी थी. आपकी शिक्षा-दीक्षा हरादेव जी के मार्गदर्शन में हुई. यहीं से उनकी सोच पर हिंदू धर्म और भारतीय संस्कृति का प्रभाव पड़ा. 1879 में उन्होंने मूइर सेंट्रल कॉलेज (अब इलाहाबाद विश्वविद्यालय) से मैट्रिक तक तथा 1884 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा पूरी की और 40 रुपये मासिक वेतन पर इलाहाबाद जिले में शिक्षक बन गए. वह आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण एम. ए. की पढ़ाई नहीं कर सके.

1886 में कलकत्ता में दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में भाग लेने के साथ आपका राजनेता और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में पदार्पण हुआ. इस अधिवेशन में उनके द्वारा दिए गए भाषण को वहां मौजूद लोगों ने काफी सराहा. आपके भाषण का असर महाराज श्रीरामपाल सिंह पर पड़ा. प्रभावित होकर महाराज ने उन्हें साप्ताहिक समाचार पत्र हिंदुस्तान का संपादक बनने और उसका प्रबंधन संभालने की पेशकश की. ढाई वर्ष तक संपादक के पद की जिम्मेदारी संभालने के बाद वह एल.एल.बी. की पढ़ाई के लिए इलाहाबाद वापस चले आए. 1891 में उन्होंने अपनी एल.एल.बी. की पढ़ाई पूरी की और इलाहाबाद जिला न्यायालय में प्रेक्टिस शुरू कर दी. वर्ष 1907 में मदन मोहन ने 'अभ्युदय' नामक हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र शुरू किया और 1915 में इसे दैनिक समाचार पत्र में तब्दील कर दिया. इस अवधि के दौरान उन्होंने कुछ मासिक पत्रिकाएं और अंग्रेजी में एक दैनिक पत्र भी निकाला. जब 'हिंदुस्तान टाइम्स' अपने बुरे दिनों से गुजर रहा था और बंद होने की कगार पर था, तब मदन मोहन मालवीय इसके तारणहार बनकर सामने आए. उन्होंने दैनिक जीवन में एक समाचार पत्र के

महत्व और इसकी भूमिका का अहसास कराया. लाला लाजपत राय और एम. आर. जयकर जैसे राष्ट्रीय नेताओं तथा उद्योगपति जी. डी. बिरला के आर्थिक सहयोग से उन्होंने समाचार पत्र को अपने अधिकार क्षेत्र में ले fy;k- 1946 तक वह इसके अध्यक्ष पद पर रहे. 1936 में समाचार पत्र का हिंदी संस्करण शुरू हो गया, यह उनके ही प्रयास का परिणाम था. वर्तमान में इस समाचार पत्र का स्वामित्व बिरला परिवार के पास है.

1909 में पहली बार मदन मोहन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने. भारत में स्काउटिंग की स्थापना मदन मोहन मालवीय, न्यायमूर्ति विवियन बोस, पंडित हृदयनाथ कुंजरू, गिरजा शंकर बाजपेयी, एनी बेसेंट और जार्ज अरुणदले के संयुक्त प्रयास से हुई. वर्ष 1913 से स्काउट में भारतीयों को प्रवेश मिलने लगा. आप वर्ष 1912 से 1926 तक इंपीरियल विधानपरिषद के सदस्य रहे. बनारस में हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 21वें अधिवेशन में मदन मोहन ने

एक हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना का विचार सबके सामने प्रस्तुत किया. 1915 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय विधेयक पास हो गया और 4 फरवरी 1916 को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, जो आज भी भारत में शिक्षा का प्रमुख संस्थान बना हुआ है. हालांकि शिक्षा और समाज कल्याण के लिए काम करने के लिए उन्होंने अपनी न्यायिक प्रेक्टिस सन 1911 में ही छोड़ दी थी लेकिन चौरी-चौरा कांड में दोषी बताए गए 177 लोगों को बचाने के लिए न्यायालय में केस लड़ा, इन सभी को फांसी की सजा सुनाई गई थी. 177 में 156 को कोर्ट ने दोष मुक्त घोषित किया. महात्मा गांधी द्वारा 1920 में शुरू किए गए असहयोग आंदोलन में मुख्य भूमिका निभाने वाले मालवीय जी विभाजन की कीमत पर स्वतंत्रता स्वीकार करने के विरोधी थे.

मदन मोहन मालवीय ने बी. एच.यू. के कुलपति का पद शिक्षाविद एस. राधाकृष्णन के लिए छोड़ दिया.

16 वर्ष की उम्र में मदन मोहन मालवीय का विवाह मिर्जापुर की कुंदन देवी के साथ वर्ष 1878 में हो गया। उनकी पांच पुत्रियां और पांच पुत्र थे। बीमारी के चलते इस महान व्यक्तित्व का 12 नवंबर 1946 को निधन हो गया.

मदनमोहन मालवीय के नाम पर इलाहाबाद, लखनऊ, दिल्ली, भोपाल और जयपुर में रिहायशी क्षेत्रों को मालवीय नगर नाम दिया गया. उनके सम्मान में भारत सरकार ने एक डाक टिकट जारी किया. उनके नाम पर मालवीय नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ

टेक्टनोलाजी-जयपुर और मदन मोहन इंजीनियर कालेज गोरखपुर, उत्तरप्रदेश का नामकरण किया गया. उनकी पहल पर शुरू की गई आरती हरिद्वार में हर की पौड़ी घाट पर अब भी की जाती है.

वे भारत के पहले और अन्तिम व्यक्ति थे जिन्हें महामना की सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया. पत्रकारिता, वकालत, समाज सुधार, मातृभाषा तथा भारतमाता की सेवा में अपना जीवन अर्पण करने वाले इस महामानव ने जिस विश्वविद्यालय की स्थापना की उसमें उनकी परिकल्पना ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश सेवा के लिये तैयार करने की थी जो देश का मस्तक गौरव से ऊँचा कर सके. मालवीयजी सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, देशभक्ति तथा आत्मत्याग में अद्वितीय थे.इन समस्त आचरणों पर वे केवल उपदेश ही नहीं दिया करते थे अपितु स्वयं उनका पालन भी किया करते थे. वे अपने व्यवहार में सदैव मृदुभाषी रहे. 'सिर जाय तो जाय प्रभु! मेरो धर्म न जाय' मालवीयजी का जीवन व्रत था.

हिन्दी के उत्थान में मालवीय जी की भूमिका ऐतिहासिक है. भारतेंदु हरिश्चंद्र के नेतृत्व में हिन्दी गद्य के निर्माण में संलग्न मनीषियों में 'मकरंद' तथा 'झक्कड़सिंह' के उपनाम से विद्यार्थी जीवन में रसात्मक काव्य रचना के लिये ख्यातिलब्ध मालवीयजी

ने देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा को पश्चिमोत्तर प्रदेश व अवध के गवर्नर सर एंटोनी मैकडोनेल के सम्मुख 1898 ई० में विविध प्रमाण प्रस्तुत करके कचहरियों में प्रवेश दिलाया. हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन (काशी-1910) के अध्यक्षीय अभिभाषण में हिन्दी के स्वरूप निरूपण में उन्होंने कहा कि 'उसे फारसी अरबी के बड़े-बड़े शब्दों से लादना जैसे बुरा है, वैसे ही अकारण संस्कृत शब्दों से गूँथना भी अच्छा नहीं और भविष्यवाणी की कि एक दिन यही भाषा राष्ट्रभाषा होगी. देश की प्रान्तीय भाषाओं के विकास के साथ-साथ हिन्दी को अपनाने के आग्रह के साथ यह भविष्यवाणी भी की कि कोई दिन ऐसा भी आयेगा कि जब अंग्रेजी की ही भाँति हिन्दी का भी सर्वत्र प्रचार होगा. इस प्रकार उन्होंने हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय रूप का लक्ष्य भी दिया.

कांग्रेस के निर्माताओं में विख्यात मालवीयजी ने उसके द्वितीय अधिवेशन (कलकत्ता-1886) से लेकर अपनी अन्तिम साँस तक स्वराज्य के लिये कठोर तप किया. उसके प्रथम उत्थान में नरम और गरम दलों के बीच की कड़ी मालवीयजी ही थे जो गान्धी-युग की कांग्रेस में हिन्दू मुसलमानों एवं उसके विभिन्न मतों में सामंजस्य स्थापित करने में प्रयत्नशील रहे. एनी बेसेंट ने ठीक कहा था कि 'मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि विभिन्न मतों के बीच, केवल मालवीयजी भारतीय एकता की मूर्ति बने खड़े हुए हैं.' असहयोग आन्दोलन के आरम्भ तक नरम दल के नेताओं के कांग्रेस को छोड़ देने पर मालवीयजी उसमें डटे रहे और कांग्रेस ने उन्हें चार बार सभापति निर्वाचित करके सम्मानित किया- लाहौर (1909 में), दिल्ली (1918 और 1931 में) तथा कलकत्ता (1933 में). यद्यपि अन्तिम दोनों बार वे सत्याग्रह के कारण पहले ही गिरफ्तार कर लिये गये. स्वतन्त्रता के लिये उनकी तड़प और प्रयासों के परिचायक फैजपुर कांग्रेस (1936) में राष्ट्रीय सरकार और चुनाव प्रस्ताव के समर्थन में मालवीयजी के ये शब्द स्मरणीय हैं कि मैं पचास वर्ष से कांग्रेस के साथ हूँ. सम्भव है मैं बहुत दिन न जियूँ और अपने जी में यह कसक लेकर मरूँ कि भारत अब भी पराधीन है. किंतु फिर भी मैं यह आशा करता हूँ कि मैं इस भारत को स्वतन्त्र देख सकूँगा.

प्रयाग के भारती भवन पुस्तकालय, मैकडोनेल यूनिवर्सिटी हिन्दू छात्रालय और मिण्टो पार्क के जन्मदाता, बाढ़, भूकम्प, सांप्रदायिक दंगों व मार्शल ला से त्रस्त दु:खियों के आँसू पोंछने वाले मालवीयजी को ऋषिकुल हरिद्वार, गोरक्षा और आयुर्वेद सम्मेलन तथा सेवा समिति, ब्वाय स्काउट तथा अन्य कई संस्थाओं को स्थापित अथवा प्रोत्साहित करने का श्रेय प्राप्त हुआ, किन्तु उनका अक्षय-कीर्ति-स्तम्भ तो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ही है जिसमें उनकी विशाल बुद्धि, संकल्प, देशप्रेम, क्रियाशक्ति तथा तप और त्याग साक्षात् मूर्तिमान हैं. विश्वविद्यालय के उद्देश्यों में हिन्दू समाज और संसार के हित के लिये भारत की प्राचीन सभ्यता और महत्ता की रक्षा, संस्कृत विद्या के विकास एवं पाश्चात्य विज्ञान के साथ भारत की विविध विद्याओं और कलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता दी गयी. उसके विशाल तथा भव्य भवनों एवं विश्वनाथ मन्दिर में भारतीय स्थापत्य कला के अलंकरण भी मालवीय जी के आदर्श के ही प्रतिफल हैं.

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1-प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर 2. बिक्री की व्यवस्था
3-प्रचार-प्रसार की व्यवस्था 4-विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, b&ey%
sahityaseva@rediffmail.com मो०:9335155949

हिन्दी साहित्य और आज का समाज

आज फिल्मों और सीरियलों के निर्माता, जिनका मुख्य लक्ष्य पैसा कमाना है, साहित्यकारों को पैसा देकर ऐसा ही साहित्य लिखवा रहे हैं जिसका मुख्य दर्शक युवा वर्ग है. ऐसे साहित्यकार और फिल्म निर्माता समाज के प्रति अपना कोई उत्तरदायित्व नहीं समझते, क्योंकि उनका एकमात्र लक्ष्य पैसा कमाना है.

—डॉ० गार्गीशरण मिश्र 'मराल'
जबलपुर, मध्य प्रदेश

साहित्य और समाज दोनों ही एक दूसरे को प्रभावित करते हैं. साहित्यकार जब समाज की मांग के अनुरूप साहित्य का सृजन करता है, तब साहित्य समाज से प्रभावित हुआ माना जाता है. उदाहरण के लिए आज के हिन्दी सिनेमा और काफी अंशों में हमारे हिन्दी सीरियलों में अश्लीलता, अंग-प्रदर्शन, फूहड़ गीत और नृत्य, हिंसा-प्रतिहिंसा अर्थात मार-धाड़, दादागिरी, षड़यंत्र और अपराध की भरमार है. आज के युवावर्ग की, जो फिल्मो और सीरियलों का मुख्य दर्शक है, यही मांग है. इसलिए फिल्मों और सीरियलों के निर्माता, जिनका मुख्य लक्ष्य पैसा कमाना है, साहित्यकारों को पैसा देकर ऐसा ही साहित्य लिखवा रहे हैं. ऐसा साहित्य लिखने वाले साहित्यकार और लिखाने वाले फिल्म निर्माता समाज के प्रति अपना कोई उत्तरदायित्व नहीं समझते या समझना नहीं चाहते, क्योंकि उनका एकमात्र लक्ष्य पैसा कमाना है. समाज गर्त में चला जाय उनकी बला से उनका जीवनदायी मूलमंत्र है-'बाप बड़ा ना भैया, सबसे बड़ा रूपैया।' समाज की आलोचना से बचने के लिए ये यथार्थवाद का सहारा लेते हुए कहते हैं कि हम तो वही प्रस्तुत कर रहे हैं जो कुछ समाज में हो रहा है-हम समाज की सच्चाई परोस रहे हैं. हमारा साहित्य समाज का दर्पण है. इस प्रकार हम सत्य के पक्षधर हैं और इसमें कोई बुराई नहीं है. लेकिन वे यह नहीं सोचते कि समाज के लिए सत्य का शिव होना भी आवश्यक है. इसी प्रकार साहित्य भी समाज को प्रभावित करता है. हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने 'सत्य के प्रयोग' नामक अपनी जीवनी में लिखा कि वे अपने जीवन में 'हरिश्चंद्र' और 'श्रवणकुमार' नामक नाटक देखकर बहुत प्रभावित हुए थे. भारत के स्वतंत्रता संग्राम के समय यहाँ के साहित्यकारों ने जो गीत और साहित्य लिखा उससे सारे देश में स्वतंत्रता की आग भड़क उठी जिसने हमें आजादी दिलाई. रूसो के साहित्य ने फ्रांसीसी क्रान्ति को जन्म दिया. ऐसा साहित्य अक्सर असत्य, अन्याय, अत्याचार, अनाचार आदि के विरूद्ध संघर्ष की आवाज होता है. इसे उत्कृष्ट साहित्य की संज्ञा दे सकते हैं. ऐसा साहित्य समाज का दर्पण तो होता ही है वह समाज का उन्नायक भी होता है. इसमें सत्य का शिव और सुंदर के साथ समागम होता है. इसी क्रम में जो साहित्य श्रेष्ठ समाज को सर्वश्रेष्ठ बनाने क लिए लिखा जाता है, वह कालजयी और उत्तम होता है. गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखी गयी रामचरित मानस एक ऐसी ही कृति है. आज का समाज, विशेष रूप से हमारी यूवा पीढ़ी, अश्लील साहित्य से पटे हुए हैं. सिने तारिकाओं के अर्धनग्न चित्रों से पत्र-पत्रिकाएँ भरी रहती हैं अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा पाने वाला युवावर्ग अश्लील अंग्रेजी उपन्यासों को बड़े चाव से पढ़ता है. फिल्मों और सीरियलों पर नजर रखने के लिए तो भारत सरकार ने सेन्सर बोर्ड बनाया है, भले ही वह अक्सर चूक जाता हो, फिर भी उसके डर से अश्लीलता पर कुछ रोक तो लगती ही है. लेकिन अश्लील साहित्य पर न तो केन्द्र सरकार ने और न ही प्रान्तीय सरकारों ने कोई प्रतिबंध लगाया है. केवल ब्लू फिल्मों के प्रदर्शन और विक्रय पर प्रतिबंध है. समाज के पास भी अश्लील साहित्य पर प्रतिबंध लगाने का कोई कारगर उपाय नहीं है. वस्तुतः अच्छा साहित्य और अच्छी शिक्षा ही पाठकों को अश्लील साहित्य से विमुख कर सकती है. लेकिन आज के बहुत कम शिक्षक और अभिभावक बच्चों को सद्साहित्य की जानकारी दे पाते हैं और उसके अनुशीलन के लिए उन्हें प्रेरित कर पाते हैं. यह कार्य विद्यालयों/महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों में भली भाँति किया जा सकता है लेकिन इस ओर बहुत कम शिक्षकों का ध्यान

रहता है. हमारी पाठ्य पुस्तकों में भी भौतिक शिक्षा देने वाले साहित्य की निरन्तर कमी होती जा रही है. लेकिन फिर भी निराश हताश होने की आवश्यकता नहीं है. अनेक सिद्धान्तवादी और आदर्शवादी साहित्यकार गरीबी का दंश सहते हुए भी सद्साहित्य की सर्जना में संलग्न हो समाज के प्रति अपना दायित्व निभा रहे हैं. उनका साहित्य भले ही कम लोगों द्वारा पढ़ा जाता हो किन्तु वह मानवता की सीख देने वाला सद्साहित्य है. ऐसा साहित्य कालजयी होता है और उसकी गुणवत्ता कभी घटती नहीं. ऐसे साहित्य में मनुष्य की जीवनधारा बदल देने की शक्ति होती है. हमारे देश के इतिहास में ऐसे कई अवसर प्रस्तुत हुए हैं. उदाहरण के लिए बिहारी के दोहे ने अपनी नवविवाहिता नवयौवना पत्नी के प्रेम में डूबकर राजकाज से विमुख हुए राजा जयसिंह को तत्काल राजदरबार में उपस्थित होने के लिए विवश कर दिया. वह इतिहास प्रसिद्ध दोहा है-

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सों बँढ़ो आगे कौन हवाल।

इसी क्रम में ओरछा नरेश की परम सुंदरी राजनर्तकी और महाकवि केशवदास की शिष्य राय प्रवीन का उदाहरण दिया जा सकता है. सम्राट अकबर ने ओरछा नरेश को संदेश भेजा कि राय प्रवीन को तत्काल अकबर के दरबार में हाजिर किया जाय, वरना ओरछा की ईंट से ईंट बजा दी जायेगी. ओरछा नरेश पशोपेश में पड़ गये. तब राय प्रवीन ने राजा से कहा कि आप जरा भी परेशान न हो. मुझे अकबर के दरबार में भिजवा दे. मैं यथावत और ससम्मान वापिस आ जाऊँगी. रायप्रवीन का आत्मविश्वास देखकर ओरठा नरेश ने उसे अकबर के दरबार में भेज दिया. इतिहास साक्षी है कि अकबर के दरबार में डोली से उतरकर रायप्रवीन ने निम्नांकित दोहा अकबर को सुनाया-

बिनती रायप्रवीन की सुनिये साह सुजान। /जूठी पातर भखत हैं बारी वायस स्वान।

इस दोहे के माध्यम से रायप्रवीन ने कहा कि वह तो ओरछा नरेश की जूठी पत्तल हैं और जूठी पत्तल केवल जूठन बटोरनेवाला बारी, कौआ या कुत्ता ही खाता है. अतः वह आपके लायक नहीं है. यह दोहा सुनकर अकबर ने रायप्रवीन को यथावत ससम्मान वापिस लौटा दिया. साहित्य की इस जीवनधारा बदल देने वाली शक्ति का प्रदर्शन सद्साहित्यकार ही कर सकते है. समाज की जीवनधारा बदलने उसे सन्मार्ग पर लाने का दायित्व सद्साहित्यकारों की है. अतः उन्हें समाज और सरकार दोनों से सम्मान और प्रोत्साहन मिलना चाहिए. क्योंकि पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण करने वाले आज के भौतिकवादी समाज को फिर से आध्यात्मवादी भारतीय संस्कृति से जोड़ने का काम ये साहित्यकार ही कर सकते है.

मूल्य वृद्धि सूचना

मूद्रण और कागजों पर भी जीएसटी दर निर्धारित हो जाने के कारण और अन्य मंहगाई को देखते हुए पत्रिका भार वहन करना संभव नहीं हो पा रहा है। इसलिए विश्व स्नेह समाज मासिक का जनवरी 2018 से शुल्क वृद्धि करने को मजबूर होना पड़ा अब शुल्क निम्नवत होगाः—

एक प्रति	15 / रुपये
वार्षिक	150 / रुपये
पंचवर्षीय	700 / रुपये
आजीवन	2100 / रुपये
सरक्षक सदस्य	11000 / रुपये

संपादक

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक

एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,

इलाहाबाद—211011

9335155949

email:vsnehsamaj@rediffmail.com

अंग्रेजी मानसिकता से मुक्त हों

देश के गणतंत्र बनने के बाद भाषा की अहमियत हमें समझाने की कोशिश सोवियत रूस ने भी की थी. एक भारतीय राजनयिक को सोवियत रूस में भारत का राजदूत बनाकर भेजा गया, जहाँ उसने अपना कार्यभार ग्रहण पत्र अंग्रेजी में सौंपा. भारतीय भाषा में न होने के कारण वहाँ की सरकार ने उस पत्र को स्वीकार करने से मना कर दिया और याद दिलाया कि अंग्रेजी गुलाम भारत की भाषा थी, अंग्रेजी में पत्र प्रस्तुत करना उसी गुलामी का प्रतीक है. फिर किसी गुलाम देश के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंध स्थापित करने का कोई औचित्य ही नहीं बनता.

-आचार्य बलवन्त

प्रत्येक भाषा की अपनी प्रकृति होती है। उसके शब्द परिवेश की आशाओं, आकांक्षाओं एवं आवश्यक्ताओं से संपृक्त होते हैं. भाषा की प्रकृति को पहचान कर ही उसके प्रवाह को अक्षुण्ण रखा जा सकता है.

लार्ड मैकाले भाषा की प्रकृति एवं व्यक्तित्व निर्माण में उसकी भूमिका को भलीभाँति समझता था. इस तथ्य की पुष्टि 2 फरवरी सन् 1835 को ब्रिटिश संसद में दिए गए उसके व्याख्यान से हो जाती है, जिसमें उसने कहा था- 'मैंने भारत के ओर-छोर का भ्रमण किया है और मैंने एक भी आदमी नहीं पाया, जो चोर हो। इस देश में मैंने ऐसी समृद्धि, ऐसे सक्षम व्यक्ति तथा ऐसी प्रतिभा देखी है कि मैं नहीं समझता कि इस देश को विजित कर लेंगे, जब तक कि हम इसके सांस्कृतिक एवं नैतिक मेरूदण्ड को तोड़ न दें। इसलिए मैं यह प्रस्तावित करता हूँ कि हम भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति एवं संस्कृति को बदल दें। क्योंकि यदि भारतवासी यह सोचने लगें कि जो विदेशी और अंग्रेजी में है, वह उनके आचार-विचार से अच्छा एवं बेहतर है, तो वे अपना आत्मसम्मान एवं संस्कृति खो देंगे तथा वे एक पराधीन कौम बन जाएंगे, जो हमारी चाहत है' लार्ड मैकाले की शिक्षानीति भारतीयों को उनकी भाषा से पृथक कर वैचारिक रूप से उन्हें पंगु बनाने की थी, उनके आत्मविश्वास को कमजोर करना था, जिसे हम नहीं समझ सके.

देश के गणतंत्र बनने के बाद भाषा की अहमियत हमें समझाने की कोशिश सोवियत रूस ने भी की थी. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को दृढ़ करने के उद्देश्य से एक भारतीय राजनयिक को सोवियत रूस में भारत का राजदूत बनाकर भेजा गया, जहाँ उसने अपना कार्यभार ग्रहण पत्र अंग्रेजी में सौंपा. भारतीय भाषा में न होने के कारण वहाँ की सरकार ने उस पत्र को स्वीकार करने से मना कर दिया और याद दिलाया कि अंग्रेजी गुलाम भारत की भाषा थी, अंग्रेजी में पत्र प्रस्तुत करना उसी गुलामी का प्रतीक है. फिर किसी गुलाम देश के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंध स्थापित करने का कोई औचित्य ही नहीं बनता। भाषा के सवाल पर सोवियत रूस की यह फटकार भाषा के प्रति हमारी उदासीनता पर करारा प्रहार है.

भाषा के प्रति उसके निवासियों के गहरे लगाव को फ्रांस की एक घटना के माध्यम से भी समझा जा सकता है- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान फ्रांस का कुछ भूभाग जर्मनी के अधीन हो गया था. जर्मनी की महारानी उस क्षेत्र के एक स्कूल का दौरा करने गई. उन्होंने विद्यार्थियों से जर्मनी का राष्ट्रगान सुनाने को कहा। केवल एक बच्ची ही राष्ट्रगान सुना सकी. यह देखकर महारानी प्रसन्न हो गईं और उस बच्ची से कुछ माँगने के लिए बोलीं. बच्ची के मुँह से अचानक ही ये शब्द निकल पड़े-'हमारी शिक्षा का माध्यम हमारी भाषा फ्रेंच बना दीजिए.' इसे कहते हैं अपनी भाषा के प्रति अनुराग.

अंग्रेजी शिक्षानीति के चलते न केवल हिंदी, अपितु अन्य सभी भारतीय भाषाएँ हाशिए पर आ गई हैं. इन दिनों भारतीय जीवन में व्याप्त पाश्चात्य प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो अंग्रेजी की देन है. खान-पान, रहन-सहन, पठन-पाठन एवं विचार-विमर्श ही नहीं, आज संबोधन एवं अभिवादन की भाषा भी अंग्रेजी हो गई है. बाजारवादी शक्तियाँ विज्ञापन के माध्यम से हमारे संस्कार को बिगाड़ने

पर तुली हैं. किसी समाज के संस्कार को बिगाड़ने के तमाम कारणों में व्यक्ति की बोलचाल व व्यवहार की भाषा को बिगाड़ देना भी मुख्य है. आजकल के विद्यार्थियों के मन में अपनी भाषा के प्रति जो अनुराग होना चाहिए, उसका अभाव है. अध्यापक और अभिभावक भी हिंदी भाषा पर ध्यान कम ही देते हैं. आज के युवा कैरियर बिल्डिंग के नाम पर अपनी भाषा से विमुख होकर संस्कृति और सभ्यता से भी दूर होते जा रहे है.

हिंदी के प्रति नवयुवकों के मन में जो उदासीनता है, उसका एक कारण हिंदी को रोजगार की भाषा न बनाया जाना भी है. हिंदी को रोजगार से जोड़े बिना वर्तमान युवा पीढ़ी के मन में हिंदी के प्रति वह भाव नहीं जाग्रत किया जा सकता, जिसकी हम आशा करते हैं.

भाषा के प्रश्न को गंभीरता से लेते हुए उच्चतम न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश एम.एन. वेंकटचलैया और न्यायमूर्ति एस. मोहन की खण्डपीठ ने यह निर्णय दिया था कि प्रारंभिक स्तर पर बच्चों को शिक्षा केवल मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए. संविधान के अनुच्छेद 350(ए) के अनुसार प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा के लिए पर्याप्त सुविधाएँ जुटाने का उत्तरदायित्व राज्यों तथा स्थानीय निकायों का है. कर्नाटक सरकार ने उच्चतम न्यायालय के आदेश को स्वीकार कर एक साहसिक व सराहनीय कार्य किया, हाँलांकि इसके क्रियान्वयन का अंग्रेजी मानसिकता के अभिभावकों ने जोरदार विरोध किया था, पर सरकार की दृढ़ इच्छा शक्ति के सामने उनकी चल न सकी.

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त यह महसूस किया गया था कि एक संविधान, एक राष्ट्रध्वज एवं एक राष्ट्रगान की ही भाँति देश की एक राष्ट्रभाषा का होना भी आवश्यक है, क्योंकि राष्ट्रभाषा के अभाव में राष्ट्र गूँगा होता है. हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाने के लिए जिन राष्ट्रीय नेताओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई उनमें महात्मा गाँधी प्रमुख हैं. राष्ट्रीय एकता के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रभाषा के प्रति अपने निश्चय को उन्होंने इन शब्दों में प्रकट किया है-'मैं हमेशा यह मानता रहा हूँ कि हम किसी भी हालत में प्रांतीय भाषाओं को नुकसान पहुँचाना या मिटाना नहीं चाहते. हमारा मतलब सिर्फ यह है कि विभिन्न प्रान्तों से पारस्परिक संबंधों के लिए हम हिंदी सीखें. ऐसा करने से हिंदी के प्रति हमारा कोई पक्षपात प्रकट नहीं होता. हिंदी को हम राष्ट्रभाषा मानते हैं. वही भाषा राष्ट्रीय बन सकती है, जिसे अधिक संख्या में लोग जानते-बोलते हों और जो सीखने में सुगम हो. सन् 1910 में गाँधीजी ने कहा था-'हिंदुस्तान को अगर सचमुच राष्ट्र बनाना है तो राष्ट्रभाषा हिंदी ही हो सकती है.'

सन् 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में गाँधीजी ने हिंदी में भाषण देते हुए स्पष्ट घोषणा कर दी थी-'हिंदी का प्रश्न मेरे लिए स्वराज्य के प्रश्न से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है.' एक भाषा-एक लिपि विषयक इसी अधिवेशन में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित हुआ था कि हिंदी भाषा और देवनागरी का प्रचार-प्रसार देश हित एवं राष्ट्रीय एकता की स्थापना हेतु होना चाहिए. इस प्रस्ताव का समर्थन तमिल भाषा के मूर्धन्य साहित्यकार रामास्वामी अय्यर ने किया था. राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक समरसता को बनाए रखने में राष्ट्रभाषा की महत्ता को गाँधीजी ने अच्छी तरह से निरूपित किया है- हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित करने में एक दिन भी खोना देश को भारी सांस्कृतिक नुकसान पहुँचाना है. देवनागरी के समान सरल, जल्दी सीखने योग्य और तैयार लिपि दूसरी कोई है ही नहीं.

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन राष्ट्रभाषा को राष्ट्रीयता का स्रोत मानते थे। उनका कहना था- 'कोई विदेशी भाषा हमारे देश की रक्षा नहीं कर सकती. राष्ट्र के विकास के लिए स्वभाषा अनिवार्य है.' उनके स्वभाषा का आशय हिंदी से ही था. टंडनजी न केवल हिंदी, अपितु अन्य सभी भारतीय भाषाओं के व्यावहारिक बनाए जाने के प्रबल पक्षधर थे. भाषा के साथ-साथ उसके सांस्कृतिक विकास पर भी उनका बल था. क्योंकि भाषा की संस्कृति ही उसे अपनी परंपराओं पर गर्व करना सिखाती है. भाषा का उसकी संस्कृति से गहरा संबंध है, संस्कृति शरीर है तो भाषा उसका प्राणतत्त्व.

कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी के प्रयासों से ही सितंबर 1949 में संविधान सभा में राजभाषा के विषय पर विचार-विमर्श हुआ. 12, 13, एवं 14 सितंबर 1949 में संपन्न इस तीन दिवसीय सम्मेलन में उपस्थित 71 सदस्यों ने हिंदी को राजभाषा बनाए जाने के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया एवं शासकीय प्रयोग हेतु भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूप को अपनाने की बात तय हो गई. हिंदी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव श्री गोपाल स्वामी आयंगर ने रखा और उसका समर्थन श्री शंकर राव ने किया, जो अहिंदी भाषी थे।

26–जनवरी–1950 को भारत का संविधान लागू हुआ. संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार संविधान लागू होने के दिन से 15 वर्षों तक हिंदी के साथ अंग्रेजी को भी संघ की सह राजभाषा के रूप में जारी रखने और

उसके बाद हिंदी को पूरी तरह से राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की योजना थी। पर ऐसा हो नहीं सका। नेताओं की व्यक्तिगत स्वार्थपरता के चलते भाषा-प्रेमियों की हिंदी को राष्ट्रभाषा के आसन पर बिठाने की चाहत भेदभाव की भेंट चढ़ गई. मतों के गुणा-गणित के आधार पर अपनी महत्वाकांक्षाओं को साधने के लिए देश के तथाकथित कर्णधारों ने जातिवाद, धर्मवाद, संप्रदायवाद एवं क्षेत्रवाद की भाँति भाषा को भी वाद-विवाद का विषय बना दिया, जिसमें उलझकर हिंदी को उसका गौरव दिलाने का चिर प्रतीक्षित स्वप्न, स्वप्न बनकर ही रह गया. स्वतंत्रता प्राप्ति के उनहत्तर वर्ष बाद भी देश की एक राष्ट्रभाषा का न होना देश की अस्मिता एवं उसके आत्मगौरव के साथ खिलवाड़ नहीं तो और क्या है? वह भाषा जो वन्देमातरम् एवं भारतमाता की जय के उद्घोष की उत्प्रेरिका रही हो, जिस भाषा ने भारतवासियों की सुप्त चेतना को झंकृत कर उनकी विलक्षणता का उन्हें बोध कराया हो, उस हिंदी का अपनी ही भूमि पर अंग्रेजी के अनुवाद की भाषा बनकर निर्वासन की जिंदगी जीना दुखद ही नहीं, चिंताजनक भी है. राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में मुंशी प्रेमचंद का उद्गार दर्शनीय है-'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र का बोध हो ही नहीं सकता. जहाँ राष्ट्र है, वहाँ राष्ट्रभाषा का होना लाजमी है. अगर संपूर्ण भारत को एक राष्ट्र बनाना है तो उसे एक भाषा का आधार लेना पड़ेगा.'

अंग्रेजों ने भारत को कई स्तरों पर कमजोर करने की साजिश रची थी. हिंदी और उर्दू के सवाल को हवा देकर सांप्रदायिक वातावरण को बिगाड़ने की उनकी कूटनीतिक चाल सफल भी हुई. सन् 1948—49 में भारत की 14 भाषाओं में 'हिंदुस्तानी' का प्रवेश उनकी कुटिल मंशा का ही प्रतिफल था. वह हिन्दुस्तानी समझौते की भाषा बनकर रह गई, जो बोलचाल के लिए उपयुक्त तो थी, पर उसमें साहित्यिक सामर्थ्य का अभाव था.

भारतीय संविधान लागू होने पर हिंदी को राजभाषा के रूप में मात्र घोषित कर १५ वर्षों की अवधि तक अंग्रेजी को राजभाषा का मान देते रहना और आशा रखना कि एक न एक दिन हिंदी राजभाषा का गौरव प्राप्त कर लेगी, कितना हास्यास्पद है। केंद्रीय गृहमंत्रालय द्वारा बनाए गए राजभाषा अधिनियम की धारा ३/१ के अंतर्गत शासकीय प्रयोजनों में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी को सहभाषा के रूप में आगे भी जारी रखने का निर्णय लिया गया फिर राजभाषा अधिनियम की धारा ३/२ के अन्तर्गत यह व्यवस्था दे दी गई कि जब तक भारत के एक भी राज्य की सरकार हिंदी को अपने राज्य की राजभाषा के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होगी, तब तक हिंदी संघ की राजभाषा के रूप में क्रियान्वित नहीं हो सकती। राजभाषा अधिनियम के इस सशर्त समझौते ने हिंदी को संघ की सशक्त राजभाषा बनने के सारे रास्ते ही अवरूद्ध कर दिए। इसलिए कि दक्षिण भारत का एक राज्य तमिलनाडु हिंदी का प्रबल विरोधी है ही और पूर्वोत्तर स्थित नागालैंड अंग्रेजी को ही अपनी राजभाषा के रूप में अपना चुका है।

मैकाले द्वारा अपने होम सेक्रेटरी को लिखे पत्र की कुछ पंक्तियों को उद्धृत करना प्रासंगिक होगा, जिसमें उसने कहा था-'मैं नहीं कह सकता कि भारत राजनीतिक रूप से आपके अधीन रह पायेगा, लेकिन इतना मैं अवश्य करके जा रहा हूँ कि यह देश राजनीतिक स्वतंत्रता पा लेने के बाद भी अंग्रेजी मानसिकता, अंग्रेजी सभ्यता और अंग्रेजी भाषा के प्रभाव से मुक्त नहीं हो सकेगा।" उसका कथन अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ। दुर्भाग्य की बात है कि हिंदी को राजभाषा बनाए जाने के प्रश्न पर देश की अन्य प्रान्तीय भाषाओं को इसके समानान्तर खड़ा करने की धृष्टता बार-बार की जाती रही है। बार-बार यह झूठी दलील दी जाती रही है कि हिंदी के राजभाषा बनने से देश की अन्य भाषाओं की अस्मिता खतरे में पड़ जाएगी, जबकि अस्मिता के संकट का खतरा देश की अन्य प्रांतीय भाषाओं को हिंदी से नहीं, बल्कि हिंदी और अन्य प्रांतीय भाषाओं व उनकी बोलियों को अंग्रेजी से है।

समय की माँग है कि हम अंग्रेजी की मानसिकता का परित्याग कर भारतीयता के आदर्शों को अपनाएँ तथा हिंदी को भारतीय संस्कृति के विकास का संसाधन बनाएं। भारत को उसका खोया हुआ गौरव तभी प्राप्त हो सकेगा, जब यहाँ का हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति अपने कार्य, चिंतन-मनन व आपसी संवाद अपने ही देश की भाषा हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में करे। अपना हस्ताक्षर तो वह अपनी भाषा में ही करे एवं हिंदी को अपनी पहचान की भाषा बनाए। हिंदी के प्रति हीन भावना से मुक्ति का मार्ग हिंदी से निकलेगा। हिंदी हमारे राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए वरदान सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

जय हिंदी!

-हिंदी विभागाध्यक्ष, कमला कालेज आफ मैनेजमेंट स्टडीस, ४५०, ओ.टी.सी. रोड, काटनपेट, बेंगलूर-५६००५३ कर्नाटक

जीवनी का अर्थ एवं परिभाषा

जीवनी को अंग्रेजी में बायोग्राफी कहते है. पश्चिम में इस विधा का इतिहास बहुत पुराना है. वहां ईसा पूर्व से ही जीवनी साहित्य लिखने की परम्परा मिलती है. आक्सफोर्ड इग्लिश-हिन्दी डिक्सनरी में जीवनी का अर्थ करते हुए लिखा है-वाइ-आगूरफि् (द स्टोरी ऑफ ए पर्सनूस लाइफ रिटेन बाइ स्बेलसम).

-शोधार्थी महेन्द्र कुमार

हिन्दी साहित्य में 'जीवनी' आधुनिक गद्य की एक महत्वपूर्ण विधा है. मनुष्य साहित्य और जीवन दोनों का केन्द्र है. जीवनी उसके जीवन और व्यक्तित्व को समग्रतः अभिव्यक्त करने वाली साहित्यिक विधा है. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने 'हिन्दी साहित्य कोश' में लिखा है 'किसी व्यक्ति विशेष के जीवन वृत्तान्त को जीवन कहते हैं. जीवनी का अंग्रेजी पर्याय 'लाइफ' अथवा 'बायोग्राफी' है. हिन्दी में जीवनी चरित अथवा जीवन-चरित्र भी कहा जाता है. (हिन्दी साहित्य कोश, पृ. 305), मानक हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार-'सारे जीवन में किसी के किये हुए कार्यो आदि का विवरण या वह पुस्तक जिसमें किसी के जीवन के मुख्य-मुख्य कार्यो का विवरण हो.' (मानक हिन्दी कोश-दूसरा खण्ड-सं. रामचन्द्र वर्मा, पृ० 373)

जीवनी को अंग्रेजी में बायोग्राफी कहते है. पश्चिम में इस विधा का इतिहास बहुत पुराना है. वहां ईसा पूर्व से ही जीवनी साहित्य लिखने की परम्परा मिलती है. आक्सफोर्ड इग्लिश-हिन्दी डिक्सनरी में जीवनी का अर्थ करते हुए लिखा है-वाइ-आगूरफि् (द स्टोरी ऑफ ए पर्सनूस लाइफ रिटेन बाइ स्बेलसम). इस प्रकार डॉ. धीरेन्द्र वर्मा 'हिन्दी साहित्य कोश' में जीवनी का अर्थ करते हुए आगे लिखते है-'जीवन-चरित कालान्तर में किंचित शुद्ध होकर जीवन-चरित्र बन गया और इसी का आधुनिक एवं संक्षिप्त रूप जीवनी अब सर्वाधिक प्रचलित है. जीवन चरित्र में निहित दोनों शब्दों को अलग करें तो जीवन के अन्तर्गत बाह्य घटनाओं को और चरित्र के अन्तर्गत चरित नायक की आन्तरिक विशेषताओं को ले सकते हैं. इस प्रकार जीवन-चरित्र अथवा जीवनी में किसी मनुष्य के अन्तबाह्य, दोनों ही जीवनों का लेखा होता है. (हिन्दी साहित्य कोश-धीरेन्द्र वर्मा, 305). हिन्दी विश्वकोष में जीवनी का अर्थ करते हुए श्री नागेन्द्र नाथ वशु लिखते है-'जिन्दगी भर का हाल, जीवन चरित' (हिन्दी विश्व कोष-श्री नगेन्द्र नाथ वशु, 350) अर्थात् जीवनी में व्यक्ति विशेष के जीवन को उसकी सम्पूर्णता एवं व्यापकता के साथ प्रस्तुत किया जाता है. जीवन का यह ब्यौरा स्व-रचित न होकर किसी न अन्य द्वारा तटस्थ तथा निष्पक्ष दृष्टिकोण के आधार पर रचा जाता है. नालंदा विशाल शब्द सागर में जीवन चरित का अर्थ लिखा है-'सारे जीवन में किये हुए कार्यो का विवरण या वृत्तान्त. इसके अनुसार वह पुस्तक जिसमें किसी के जीवन भर का वृत्तान्त हो. (नालन्दा विशाल शब्द सागर-श्री नवल जी-456)

सामान्य जीवन-चरित सारे जीवन में किसी के किए हुए कार्यो का वर्णन होता है. उसमें नायक के सम्पूर्ण जीवन या उसके यथेष्ट भाग की चर्चा होनी चाहिए. पर यह कोई ऐसा नियम नहीं है जिसका पालन करना हर समय सम्भव हो सके. जीवनी का लेखक अपने चरित नायक के जीवन वृत्त को साकार करने के लिए व्यक्ति विशेष के जीवन की घटनाओं पर बहुत बल देता है लेकिन घटनाओं का परिगणन मात्र जीवनी नहीं, उसमें घटनाएँ और चरित्र, युग और पृष्ठभूमि सबका समायोजन रहता है. अतः जीवनी का रचना विधान लेखक को विशिष्ट रचना सामर्थ्य की भी अपेक्षा रखता है. कुल मिलाकर जीवनी व्यक्ति-विशेष के जीवन का ऐसा चित्र है जहाँ उसके जीवनगत तथ्यों और चरित्र की विशेषताओं को ऐसी कलात्मकता के साथ विन्यस्त किया जाता है कि वह शब्द चित्र सजीव हो उठता है.

परिभाषा-जीवनी एक गुंफित विधा है जिसके केन्द्र में व्यक्ति और उसका अंतर बाह्य जगत है. दूसरी ओर, उस व्यक्ति के माध्यम से ही पूरा युग और पृष्ठभूमि भी ध्वनित होती है. जीवनी लेखन एक चुनौतीपूर्ण विधा है जो लेखक से विशिष्ट रचनात्मक प्रतिभा की अपेक्षा रखती है. बाबू गुलाबराय ने जीवनी को परिभाषित करते हुए लिखा है-'जीवनी लेखक अपने चरित्र नायक के अन्तर-बाह्य स्वरुप का चित्रण कलात्मक ढंग से करता है. इस चित्रण में वह अनुपात और शालीनता का पूर्ण ध्यान रखता हुआ सहृदयता, स्वंत्रता और निष्पक्षता के साथ अपने चरित्र नायक के गुण, दोष मय सजीव व्यक्तित्व का एक आकर्षक शैली में उद्घाटन करता है. (काव्य के रुप-बाबू गुलाब राय-232)

बाबू गुलाब राय जी ही 'हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' में पुनः जीवनी साहित्य पर प्रकाश डालते हुए लिखते है- जीवनी इतिहास और उपन्यास के बीच की विधा होती है. उसमें इतिहास का सत्य की ओर आग्रह रहता है और उपन्यास का व्यक्ति के व्यक्तित्व पर बल दिया जाता है. जीवनियां दो प्रकार की होती है-एक दूसरे के द्वारा लिखी हुई, जैसे कि पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी की लिखी हुई, सत्य नारायण जी की जीवनी और दूसरी आत्मक के रुप में लिखी हुई. जैसे महात्मा गांधी की अथवा डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद की. (हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास-बाबू गुलाबराय पृ० 97)

पाश्चात्य विद्वान जॉनसन ने जीवनी की परिभाषा इस प्रकार दी है-'जीवनीकार का लक्ष्य जीवन की उन घटनाओं और क्रिया कलापों का रजक वर्णन होता है जो व्यक्ति विशेष की बड़ी से बड़ी महानता से लेकर छोटी से छोटी घरेलू बातों तक सम्बन्धित होती है. अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ टेक्निकल टर्म्स ऑफ लिटरेचर' में शिप्ले ने जीवनी के स्वरुप को इस प्रकार स्पष्ट किया है, 'जीवनी किसी व्यक्ति विशेष की जीवन घटनाओं का विवरण है. अपने आदर्श रूप में वह किसी व्यक्ति विशेष की जीवन घटनाओं का विवरण है. अपने आदर्श रूप में वह प्रयत्न पूर्वक लिखा गया इतिहास है. जिसमें व्यक्ति विशेष के सम्पूर्ण जीवन का उसके किसी अंश को सम्बन्धित बातों का विवरण मिलता है. ये आवश्यकताएं उसे एक साहित्यिक विधा का रूप प्रदान करती है.' (टेक्निकल टर्म्स ऑफ लिटरेचर-शिप्ले)

इसी प्रकार जीवन के स्वरुप की व्याख्या करते हुए पश्चिमी विद्वान वाइपियन डी सोला ने लिखा है-'इतिहास की दृष्टि से जीवनी आलोचनात्मक, उत्सुकता, विवरणों के औचित्य पूर्ण विश्लेषण और चयन पर बल देती है. इतिहास और साहित्य के अतिरिक्त जीवनी व्यक्ति विशेष का अध्ययन भी है. उसकी अभिव्यक्ति इस ढंग से की जानी चाहिए कि उसमें यह प्रतीत हो कि उस व्यक्ति विशेष से लेखन का घनिष्ठ सम्बंध रहा है. जीवनी की अभिव्यक्ति बहुत स्वाभाविक और सहज गति से अथवा बतकल्लुफी से ही की जानी चाहिए.'

भारतीय साहित्य मनीषी डॉ० गोविन्द त्रिगुणयत का कथन है कि 'जीवन कथा वह साहित्यिक विधा है. जिसमें भावुक कलाकर किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का या उसके जीवन के किसी भाग का वर्णन परम सुपरिचित ढंग से इस प्रकार व्यक्त करता है कि उस व्यक्ति की चर्चा जीवन गाथा के साथ-साथ कलाकार का हृदय भी मुखरित हो जाता है.

इस परिभाषा के अनुसार जीवनी के केन्द्र में चरित नायक और उसका कृतित्व रहता है. इसलिए जब जीवनी के चरित नायक का चयन किया जाता है तब जीवनीकार के मन में यही तत्व सर्वप्रमुख रहता है कि चरित नायक का चरित्र प्रेरक और आकर्षक हो अर्थात् मनुष्य की मानवीयता, कर्मठता और सदाशयता को प्रकाशित करने वाला व्यक्तित्व की किसी भी जीवनी का केन्द्र बिन्दु बनता है. 'काव्य शास्त्र' में डॉ० भागीरथ मिश्र ने जीवनी विधा का विवेचन करते हुए लिखते है-"इस गद्य के साथ निजी सम्पर्क होता है. इसमें रोचक, प्रभावपूर्ण घटनाओं और विवरणों को चुनकर जीवन चरित्र का रुप प्रस्तुत किया जाता है. नायक कोई प्रसिद्ध व्यक्ति होता है. घटनाओं का कच्चा जीवन लेखा प्रस्तुत करना ही इसका ध्येय होता है. रचनात्मक विशेषता जिस जीवनी में होगी वही गद्य काव्य का रुप हो सकता है, अन्यथा वह गद्य काव्य न होकर इतिहास होगा" (काव्य शास्त्र-भागीरथ मिश्र, पृ० 74)

जीवन चरित्र जीवन की ऐतिहासिक घटनाओं का स्थूल साहित्यिक उल्लेख भी नहीं है, जीवनी साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन है. मनुष्य की मुद्रा और भावना उसके मन की क्रिया-प्रतिक्रिया और जीवन के क्रम में उसके मस्तिष्क के विकास का अध्ययन एक अत्यन्त गूढ़ विषय है. मनुष्य का व्यक्तित्व मानसिक क्रियाओं का परिणाम है. इन मानसिक क्रियाओं का अध्ययन और उनका सफल चित्रण जीवनी साहित्य का अनिवार्य विषय है. (हिन्दी साहित्य में जीवन चरित का विकास-चन्द्रावती सिंह-पृ०11)

इस परिभाषा में लेखिका ने जीवनी साहित्य को एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन माना है, जिसमें मनुष्य के मस्तिष्क के विकास क्रम को स्पष्ट रुप से लिखा जाता है. जहां इन्होंने मानसिक क्रियाओं के सफल चित्रण का उल्लेख किया है. उससे स्पष्ट है कि यह जीवनी में उन सभी विशेषताओं का समावेश रखने के पक्ष में है. जो कि इनको एक उत्कृष्ट साहित्यिक जीवनी बना सकती है. निष्कर्षतः विद्वानों की परिभाषाओं के अनुसार हम कह सकते हैं कि जब कोई लेखक कुछ वास्तविक घटनाओं के आधार पर श्रद्धेय व्यक्ति की जीवनी कलात्मक रूप से प्रस्तुत करता है तो साहित्य का वह रुप जीवनी कहलाता है. जीवनी में लेखक व्यक्ति के आन्तरिक और बाह्य व्यक्तित्व का स्पष्ट रुप से विवेचन करता है, उसके वर्णन में एक विशेष प्रकार की कलात्मकता होती है, जो उसे गद्य की अन्य विधाओं से पृथक करती है.

-प्राध्यापक, राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, डाबड़ी, जिला-हनुमानगढ़, राजस्थान-03

ik[kM

कुछ समय पूर्व बिलगेटस ने अजीम प्रेमजी जैसे कई उद्योगपतियों द्वारा अपनी आय का एक बड़ा भाग भ्रष्टाचारियों को घोंटाला काण्डों को अंजाम देने के लिए दान देने की घोषणा ने अंकुश लगाने के सारे नियमों को कम जोर कर दिया है।

-डॉ० अरूण कुमार 'आनंद'

भारतवर्ष के आसाम और अरूणाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में बोली जाने वाली टाँका भाषा, और लिखी जाने वा ली टाँकड़ी लीपि को टाँकड़ी परंपरा प्राचीनकाल से ही सर्वप्रचलित चली आ रही हैं. संभवत इसीलिए वहां परित्क्त्त एवं विधवा महिलाओं को टाँकड़ी कहा जाता है, टाँकड़ी का सर्व अर्थ है घूमतु बाऊल, प्रजाति की नृत्यांगना, टाँकड़ी सौन्दर्यता परिपूर्ण नव युवती यदि भरे बाजार गली कूँचों से गुजरती है पूरूषों का वशिभूत होना स्वभाविक ही है, उसे टकुरिया कहकर सबोधित किया जाता है. टकुरिया का पहाड़ी अर्थ है, कोठों पर रहने वाली तवायफें कलान्तर यह 'टकुरिया' शब्द टकुरिया (टोकरी) में परिवर्तित हो गया, अर्थात (कूड़ा-करकट-मलबा उठाने का पात्र रियासती रजवाड़ों क युगकाल में कला मनिषियों (कवि-गायक -साहित्य सृजक विशेषज्ञों) को सम्मानपूर्वक राजा के बगल में सिंहाशन पर विशेष प्रकार का मुकट (ताज) पहनाकर बिठा दिया जाता था।वर्तमान में कवियों-गीत,संगीतकारों-साहित्यकारों को बेऊर्थ का मनुष्य समझकर टोकरियों में बिठा दिया जाता है, अर्थात् उनकी रचनाओं को डस्टबीन में फेंक दिया जाता हैं. गली कूँचों में चप्पल घिसने वाले कलम घिस्साव लोगों सर्वो श्रेष्ठ कला सम्राट-साहित्यमहर्षि मानकर लाखें के सम्मनिपाधी से अलंकृत करने का प्रचलन चल पड़ा है. हम यहां पर ऐसे ही टाँकड़ी वालों को वर्णन कर रहे हैं. जिन्हें प्रकाशक गण चटकारें लेकर सुर्खियों में छापते हैं, तात्पर्य यह कि हिन्दी क्षेत्र में शुद्ध भाषा शैली की जगह खिचड़ी भाषा शैली का महात्मय (रूतबा) बढ़ गया है, झाडू लगाकर. टाँकड़ी भाषा का प्रचलन व्यापक रूप से प्रचलित है. विश्वस्तर पर असहाय-निराक्षितोपर अन्याय करने वाले लोग एक ओर अत्याचार-शोषण भ्रष्टाचार शारीरिक मानसिक उत्पीड़न घपला घोटाला को समाप्त करने का आवहान करते हैं, वही दूसरी ओर आंकठ इन्हीं कूकृत्यों में डूबे हुए पाये जाते हैं, कोभी टाँकड़ीवाल कहा जाये तो अनुचित नहीं होगा?

कुछ समय पूर्व बिलगेटस ने अजीम प्रेमजी जैसे कई उद्यौगपतियों द्वारा अपनी आय का एक बड़ा भाग भ्रष्टाचारियों को घोंटाला काण्डों को अंजाम देने के लिए दान देने की घोषणा ने अंकुश लगाने के सारे नियमों को कमजोर कर दिया हैं तो भारत के संदर्भ में मैं समझता हूँ टाँकड़ी भाषा का ही उपयोग करना उचित होगा, निश्चित रूप से राजा से भगवान अपने आप को मानने वाले लोगों के द्वारा दान में दी गई रकम निरकुश होता चला गया, दोनों ही देने और लेने वाले की प्रगति कहां हुई? सारी रकम बीच का सरकारी अमला शहद लगाकर चाट गया. बसः आचरण की चर्चा विश्व मिड़िया में होनी स्वाभाविक थी, इस प्रकार के पतन-नैतिक शिक्षा को पाठयक्रम में शामिल कर महादान की चर्चा यूं भी जीवन में इसीलिए भी दान जरूरी है कि महादान की नतिकता निरंतर गायब होती जा रही है. दान करने की हैसियत रखने वाले और निरपेक्षता के चलते धर्म का दुनिया के तमाम उद्योगपति चूंकि कलान्तर में उद्योगपतियों द्वारा दिये गये दान का प्राकृतिक एवं स्वाभाविक उपयोग नहीं रहा तो इस महादान से प्रेरणा लेते हुए यह धीरे-धीरे स्वंत ही विलुप्त हो जायगा. मगर क्या वजह है कि हमारे हर पीढ़ी में तमाम उर्म हर दूसरे दिन नाखून काटने और सिर मुड़ांने के बावजूद न तो यह खत्म हो रहे हैं न ही इनक उगने की गति धर्म रही है? आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की दृष्टि शायद ठीक ही पड़ी थी कि धर्म और सत्ता में रूतबा हासिल करने व पाखण्ड़ रचने का पहलू अधिक दिखाई देता है. लगभग सभी धर्म शास्त्र हमें यही प्रेरणा देती है कि किसी व्यक्ति या परिवार को दिया गया दिया जाने वाला दान गुप्त रूप से दिया जाना चाहिए ना कि ढ़ीढ़ोरा पीटकर दिया जाना चाहिए।इसका मुख्य वजह यह है कि दान स्वीकार करने वाला व्यक्ति शर्मिन्दगी या अपमान न समझें अथवा अपमानित न हो। ईस्लाम धर्म परोपकार स्वरूप दान (जकात) को बंद मुट्ठी से

दिए जाने का हिमायती है कि हाथ से किया गया जकात दूसरे हाथ को भी भनक नहीं लगनी चाहिए. परन्तु जो दान परोपकार और परमार्थ की नई परंपरायें स्थापित हो रही हैं से लगता है शोहरत हासिल करने की परंपरा है या यूं कहं असहाय मजबूरों के खरीद फरोक का सौदा है या पांखड़ ज्यादा है. ना कि समाज सेवा है. मजे की बात तो वह है कि आधुनिक युग मे अति महत्वकाक्षां से लोभ-मोह, माया, अहंकार से लेकर तमाम मानवीय विकारों को हर मनुष्य में पैदा करके उसे बढ़ावा दिया जाने लगा हैं, हिंसा करने के तौर तरीके और उपाये भी तो आसानी से उपलब्ध है. फल स्वरूप इसका प्रतिशत तो बढ़ना ही है.

अवैध धन-सम्पत्ति का निस्तारण काले धन को सफेद करने का जरिया धार्मिक एवं राजनैतिक हिंसा के अतिरिक्त दिखावे और पाखंड का स्वरूप भी बढ़ा सार्वजनिक धर्म के आचरण में व्यक्ति चरित्रहीन पराभाव का शिकार भी हुआ. यह बात लोगों के जहन में घर कर गया कि सरकारी मुलाजिमों को खरीदा जा सकता है. कम या अधिक कीमत पर हाल ही के घोटालों ने साबित कर दिया है कि देश में आज भी टाँकड़ी भाषा का वर्चस्व स्थापित है. मैं अपने इस व्यंगय रचना में किसी घोटाले या राजनेता के विशेष का नाम प्रगट न करके इसे जनरालाईज करते हुए व्यंग कर रहा हूँ जिससे कैलेण्डर की तारिख इस मेरे व्यंग को पूराना न कर दें घपला-घोटाला कहां नहीं है, इनका क्या है, औसतन में दो की दर से उच्चस्तरीय घोटालें होते रहते हैं जो मीडिया को लिए चटकारेंदार मसाला होता है कि श्रेणी में मीडिया भी एक स्वतः सार्वजनिक घोटाला है. राजनेताओं की मरम्मत करने के साथ-२ अपने बनाने-चलाने और पालन-पोषण करने वालों की मरम्मत करने में भी किसी से कमतर नहीं है. जो टाँकड़ी शतरंज की बाजी चली जाती है. जो पत्र-पत्रिकाओं के लिए सनसनीखेज स्कूप स्टोरी बन सकते हैं. जिनमें सरकार को हिलाने का दम होता है, जो भले ही स्वयं न हिल पाते हों मेरा तात्पर्य उठने-बैठने हिलने-डुलने से है, ना कि डंड़ी-झड़ी हिलाने से. विरोधी जमात (पार्टी) का नवजीवन प्रायश्चित करने का मौंका भले ना दें संसद में मुक्का तान चिल्लाने का मौका तो देते ही हैं. सो इस व्यंग को अकाईब रूप में संजोया तो जा ही सकता है. जिसे संपादक चाहे तो छापे या टोकरी में डालकर ढेर पर फेंकवा दें यह सामयिक-तत्कालिक प्रासंगिक होगा ही? अब यही चाहता है कि यदि उसने सौ-दो सौ रूपये दान दिया है तो नाम टापर में आना चाहिए की मानसिकता ने उसे केवल भौंकने वाला जीवों बना दिया हैं. भौंकने और और चाटने की भी एक कला होती है. जिसे चटकऊआ टाँकरी कहा जाता है. हम नहीं कहते कि ऐसा जीव जनखों की जमात में होता होगा किंतु उस धर्मयज्ञ में शामिल होने वाले अज्ञार्थियों व दर्शनार्थियों को पता लगाना चाहिए कि अमुक वस्त्र दान-स्वरूप किसने दिया है. उद्धाहरण क तौर पर किसी मन्दिर या धर्मस्थल पर कोई एक पत्थर लगवाता है तो उस पर उसका नाम-पता खुदा होना चाहिए की मानसिकता ने उसे दानी के श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है. चाहे भले ही वह रकम कालाधन ही क्यों न हो? गोरे-काले का यह संघर्ष तो पृथ्वी से प्राचीन काल से ही चला आ रहा है. यह तो रही देश के महान्तम टाँकड़ीदारों की एक झलक, अब जरा गौर करिये इन दिनों गरीब कन्याओं का समूहिक विवाह संस्कार आयोजन का भूत राष्ट्रव्यापि स्तर पर परवान चढ़ रहा है. यदि दुल्हा, दुलहिन के नाम चेहरों को सार्वजनिक करने का प्रचलन निश्चित रूप से सराहनिय व प्रशंसनिय विषय है. इसे और बढ़ावा दिये जाने की जरूरत है. सर बाईबल ऑफ फिटेस्ट के सिद्धान्त को ध्यान में रखे तो हम सहज ही समझ सकते हैं, तमाम कोशिशों के बावजूद जिस तरह से समाज पर अनैकता का बुखार दिन दूनी रात चौगुनी गति से चढ़ता जा रहा. सरकार और नेताओं ने यह मुहिम कई योजनाओं और स्तर से चलाना शुरू भी कर दिया है कि विश्व गुरू भारत को अब भ्रष्टाचार के पक्ष में खुलकर सामने आ जाना चाहिए? और दुनिया को भ्रष्टाचार के लाभ बताना चाहिए, उन्हें समझाना चाहिए कि कैसे सरकारी विभागों में टाँकड़ी लिपि में काम काज होता है. पारदर्शिता का समय आ गया है, तो सब कुछ पारदर्शक ही होना चाहिए. विज्ञापन बाला और फिल्मी नाटिकांए पारदर्शी होती जा रही हैं. इन्हें 'चोली के पीछे क्या है' गीत से कोई ऐतराज नहीं है. चोली के पीछे और घाघरे के नीचे क्या है वह दुनिया को जानकारी है, तो फिर पारदर्शी होने में शर्म हवा कैसी?

शेष अगले अंक में......

मैदान में हारा हुआ इंसान
फिर से जीत सकता है
लेकिन
मन से हारा हुआ इंसान
कभी नहीं जीत सकता

हिन्दीतर भाषी रचनाकारः

ॐ नमः शिवाय

-**विजय कुमार सम्पत्ति,**
सिकंदराबाद, तेलांगना

भाग-६

दक्ष प्रजापति

सती और शिव का विवाह तो दक्ष ने करा दिया, लेकिन दक्ष अपने अपमान और अपने मन से शिव के प्रति वैमनस्य भाव को नहीं मिटा पाते है. सती द्वारा भगवान शिव का वरन करने के परिणामस्वरूप, दक्ष प्रजापति के मन में सती के प्रति आदर कुछ कम हो गया था.

सती के चले जाने के पश्चात दक्ष प्रजापति, शिव तथा सती की निंदा करते हुए रुदन करने लगे, इस पर उन्हें दधीचि मुनि ने समझाया, 'तुम्हारा भाग्य पुण्य-मय था, जिसके परिणाम स्वरूप सती ने तुम्हारे यहाँ जन्म धारण किया, तुम शिव तथा सती के वास्तविकता को नहीं जानते हो. सती ही आद्या शक्ति मूल प्रकृति तथा जन्म-मरण से रहित हैं, भगवान शिव भी साक्षात् आदि पुरुष हैं, इसमें कोई संदेह नहीं हैं. देवता, दैत्य इत्यादि, जिन्हें कठोर से कठोर तपस्या से संतुष्ट नहीं कर सकते उन्हें तुमने संतुष्ट किया तथा पुत्री रूप में प्राप्त किया. अब किस मोह में पड़ कर तुम उनके विषय में कुछ नहीं जानने की बात कर रहे हों? उनकी निंदा करते हो?'

इस पर दक्ष ने अपने ही पुत्र मरीचि से कहा, 'आप ही बताएं कि यदि शिव आदि-पुरुष हैं एवं इस चराचर जगत के स्वामी हैं, तो उन्हें श्मशान भूमि क्यों प्रिय हैं? वे विरूपाक्ष तथा त्रिलोचन क्यों हैं? वे भिक्षा-वृति क्यों स्वीकार किये हुए हैं? वे अपने शरीर में चिता भस्म क्यों लगते हैं?'

इस पर मुनि ने अपने पिता को उत्तर दिया, 'भगवान शिव पूर्ण एवं नित्य आनंदमय हैं तथा सभी ईश्वरों के भी ईश्वर हैं, उनके आश्रय में जाने वालो को दुःख तो है ही नहीं. आपकी विपरीत बुद्धि उन्हें कैसे भिक्षुक कह रही हैं? उनकी वास्तविकता जाने बिना आप उनकी निंदा क्यों कर रहे हो? वे सर्वत्र गति हैं और वे ही सर्वत्र व्याप्त हैं. उनके निमित्त श्मशान या रमणीय नगर दोनों एक ही हैं, शिव लोक तो बहुत ही अपूर्व हैं, जिसे ब्रह्मा जी तथा श्री हरी विष्णु भी प्राप्त करने की आकांक्षा करते हैं, देवताओं के लिए कैलाश में वास करना दुर्लभ हैं. देवराज इंद्र का स्वर्ग, कैलाश के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हैं. इस मृत्यु लोक में वाराणसी नाम की रमणीय नगरी भगवान शिव की ही हैं, वह परमात्मा मुक्ति क्षेत्र हैं, जहाँ ब्रह्मा जी आदि देवता भी मृत्यु की कामना करते हैं. यह तुम्हारी मिथ्या भ्रम ही हैं कि श्मशान के अतिरिक्त उनका कोई वास स्थान नहीं हैं. आपको व्यर्थ मोह में पड़कर शिव तथा सती की निंदा नहीं करनी चाहिये.'

इस प्रकार मुनि दधीचि द्वारा समझाने पर भी दक्ष प्रजापति के मन से उन दंपति शिव तथा सती के प्रति हीन भावना नहीं गई तथा उनके बारे में निन्दात्मक कटुवचन बोलते रहें. वे अपनी पुत्री सती की निंदा करते हुए विलाप करते थे, 'हे सती! हे पुत्री! तुम मुझे मेरे प्राणों से भी अधिक प्रिय थीं, मुझे शोक सागर में छोड़-कर तुम कहाँ चली गई. तुम दिव्य मनोहर अंग वाली हो, तुम्हें मनोहर शय्या पर सोना चाहिये, आज तुम उस कुरूप पति के संग श्मशान में कैसे वास कर रहीं हो?"

इस पर दधीचि मुनि ने दक्ष को पुनः समझाया, 'आप तो ज्ञानियों में श्रेष्ठ हैं, क्या आप यह नहीं जानते हैं कि उस स्वयंवर में इस पृथ्वी, समुद्र, आकाश, पाताल से जितने भी दिव्य स्त्री-पुरुष आयें थे, वे सब इन्हीं दोनों आदि पुरुष-स्त्री के ही रूप हैं। तुम उस पुरुष (भगवान शिव) को यथार्थतः अनादि (प्रथम) पुरुष जान लो तथा त्रिगुणात्मिका परा भगवती तथा चिदात्मरूपा प्रकृति के विषय में अभी अच्छी तरह समझ लो. यह तुम्हारा दुर्भाग्य ही हैं की तुम आदि-विश्वेश्वर भगवान तथा उनकी पत्नी परा भगवती सती को महत्व नहीं दे रहे हो. तुम शोक-मग्न हो, यह समझ लो की हमारे शास्त्रों में जिन्हें प्रकृति एवं पुरुष कहा गया हैं, वे दोनों सती तथा शिव ही हैं. '

पुनः दक्ष ने कहा, 'आप उन दोनों के सम्बन्ध में ठीक ही कह रहें होंगे, परन्तु मुझे नहीं लगता हैं कि शिव से बढ़कर कोई और श्रेष्ठ देवता नहीं हैं. यद्यपि ऋषिजन सत्य बोलते हैं, उनकी सत्यता पर कोई संदेह नहीं होना चाहिये, परन्तु मैं यह मानने को सन्नद्ध नहीं हूँ कि शिव ही सर्वोत्कृष्ट हैं. इसका मूल कारण हैं, जब मेरे पिता ब्रह्मा जी ने

शेष पृष्ठ पर.३१....

मेरी साहित्यिक यात्रा

-डॉ. विनय कुमार मालवीय

बचपन जीवन का एक ऐसा अनमोल समय होता है जो धर्म, जाति व छुआछूत जैसे कुविचारों से अंजान एवं दूर रहता है. इस दिशा के बाल साहित्यकारों की महती भूमिका होती है। बाल साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से बच्चों में दया ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, परोपकार, गुरूजनों का सम्मान जैसे नैतिक गुण विकसीत करने में सहायक सिद्ध हो सकते है.

सन् 1982 की बात है, जब मेरे बचपन की एक सोच, एक कल्पनाप ने साकार रूप धारण किया. बचपन में मैं बच्चों की पत्रिकाओं को नियमित रूप से पढ़ा करता था. उन कहानियों को पढ़ते समय मन में यह इच्छा होती थी कि कभी मेरी भी कोई कहानी इन पत्रिकाओं में प्रकाशित हो तो कितना अच्छा लगेगा. मैंने बच्चों की एक लोकप्रिय साप्ताहिक पत्रिका लोटपोट में अपनी एक कहानी प्रकाशनार्थ प्रेषित की. कुछ समय बाद जब उस रचना के प्रकाशन की स्वीकृति प्राप्त हुई तो मेरे खुशी की कोई सीमा न रही. उस असीम सुखानुभूति का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता. 'लोट-पोट' में प्रकाशित उस कहानी से मुझे कहानी लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई. इसके बाद विभिन्न समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में मेरी बाल कहानियां, बाल कविताएं एवं लेख प्रकाशित होने लगे। इसमें लोटपोट, चंपक, बाल भारती, बालवाणी, नवभारत टाइम्स, संडे आब्जर्वर दैनिक हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, अमर उजाला, जनसत्ता, स्वतंत्र भारती राष्ट्रीय सहारा, लोकमत, रांची एक्सप्रेस संड़ेमेल, अपना बचपन, आज, अमृत प्रभात, देवपुत्र अपना बचपन बालहंस, नई दुनिया, बाल साहित्य समीक्षा विश्व स्नेह समाज

इलाहाबाद आदि प्रमुख है।

इसके साथ ही आकाशवाणी-इलाहाबाद केन्द्र एवं दूरदर्शन-नई दिल्ली से भी मेरी कई कहानियॉ प्रसारित हुई.

साहित्य अकादमी, म०प्र० की मासिक पत्रिका 'साक्षात्कार' के बाल साहित्य विशेषांक नवम्बर-2012 में मेरा प्रथम बाल नाटक भी प्रकाशित हुआ. 'लोटपोट' में प्रकाशित बाल कहानी से जो साहित्यिक यात्रा प्रारम्भ हुई, वह अनवरत गतिशील है. मेरी 350 से अधिक रचनाएँ एवं एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं.

जीवन परिचयः-मेरा जन्म 2 अक्टूबर, 1950को इलाहाबाद शहर के लोकनाथ मोहल्ले में हुआ था. मेरे पितामह श्री गौरी शंकर जी मालवीय उर्फ गौरी महाराज शहर के एक प्रख्यात व्यवसायी थे. उनकी लोकनाथ (चौक) में किराने की एक दुकान थी. जहॉ शहर के सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता बैठकर देश-विदेश की सामाजिक, साहित्यिक एवं राजनैतिक गातिविधियों पर चर्चा किया करते थे. पिताजी श्री लालजी मालवीय साथ में हाथ बटाया करते थे. मॉ श्रीमती गुलाब देवीजी एक धर्मपरायणा महिला थी. उनका अधिकांश समय घर की देखभाल और धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यतीत होता था. मेरे अनुज श्री उदय कुमार मालवीय वरिष्ठ पत्रकार है. मेरी एक बहिन उमा थी. उनका व उनके पति असामयिक निधन हो गया. उनकी दोनों बेटियॉ मेरे साथ रही. मेरा विवाह 16 जून 1973 को इलाहाबाद में ही निर्मला के साथ सम्पन्न हुआ. लेखन कार्य को गाति प्रदान करने एवं समय-समय पर आने वाले विभिन्न भावनाओं को हटता-पूर्वक सामना करन में मेरी पत्नी का सहयोग एवं संबल मुझे निरन्तर प्राप्त होता रहता है। मेरी दो बेटियॉ है। बड़ी बेटी डॉ० शिखा मालवीय एवं छोटी डॉ० वदना मालवीय. दोनों का विवाह सम्पन्न

हो चुका है.

शिक्षा:-मैंने प्राथमिक शिक्षा नगर पालिका स्कूल से, कक्षा 6 से 12 तक की शिक्षा केसर विद्यापीठ इंटर कॉलेज, इलाहाबाद से. जब मैं बी.एस.सी-प्रथम वर्ष का छात्र था उसी वर्ष शिक्षा निदेशालय, उ०प्र०, इलाहाबाद से आजीविका से आबद्ध होने के कारण वर्ष 1972 में स्नातक, वर्ष 1976 में कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर से परास्नातक किया. 2002 में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर से इतिहास विषय में पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त की.

साहित्य सृजनः प्रकाशित पुस्तकेः- **बाल कहानी संग्रह**-ईमानदार सोनू की लापरवाही, सच्चा दोस्त, साहस का परिचय, टामी की वफादारी, पढ़ाई का महत्व, अमर शहीद, श्रेष्ठ बाल कहानियॉ एवं अनोखी सीख, **बाल काव्य संग्रह**-देश पर कुर्बान हैं, बाल कविताएँ, **जीवनीः**-लोकमान्य बाल गंगाध ार तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, **नाटकः** प्रेरक बाल नाटक, **अन्यः** बाल साहित्य के साथ ही कुछ लघु कथायें भी मैंने लिखा जो आजकल, दैनिक जागरण आदि समाचारपत्र एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई.

विशेष:-विभिन्न साहित्यकारों द्वारा सम्पादित कहानी संग्रह एवं कविता संग्रह में मेरी रचनायें संकलित है. अनेक शोध प्रबन्धों में मेरी रचनाओं का उल्लेख किया गया है. इसके साथ ही मेरी साहित्यिक कृतियों पर रूहेलखण्ड़ विश्वविद्यालय-बरेली, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, बुन्देलखण्ड़ विश्वविद्यालय, झॉसी, डॉ० बी० आर० अम्बेड़कर विश्वविद्यालय, आगरा में शोध एवं लघु शोध सम्पन्न हुए. इसके अतिरिक्त कुछ अन्य विश्वविद्यालयों में शोध एवं लघु शोध हो रहे हैं.

मुझे विभिन्न संस्थाओं से शकुन्तला शिरोमठिया बाल साहित्य पुरस्कार, भारतीय बाल कल्याण संस्थान कानपुर, बाल साहित्य, संस्कृति, कला विकास संस्थान बस्ती, नागरी बाल साहित्य संस्थान बलिया, भारतीय संस्कृति एवं साहित्य संस्थान इलाहाबाद, लक्ष्मण प्रसाद अग्रवाल बाल साहित्य शिखर सम्मान, रस भारती संस्थान, वृन्दावन ,महेश चन्द्र गुप्त स्मृति सम्मान, श्रद्धा समाजोत्थान समिति पीलिभीत, राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान उ०प्र० द्वारा जय शंकर पुरस्कार, अ० भा० हंसवाहिनी भिक्षा समिति, अ० भा० मालवीय सभा प्रयाग, हिन्दी सभा सीतापुर, पं० भूप नारायण दीक्षित बाल साहित्य पुरस्कार हरदोई, शिक्षा निदेशालय मिनिस्टीरियल कर्मचारी संघ इलाहाबाद, साहित्यिक सांस्कृतिक कला संगम अकादमी परियावॉ प्रतापगढ़, रोटरी क्लब इलाहाबाद,अभिव्यजंना फर्रूखाबाद, बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध संस्थान भोपाल, कनीरदीप सम्मान मुरादाबाद, श्रीमदार्यावर्त विद्वत्परिषद् प्रयाग, कादम्बरी जबलपुर, मन्दाकिनी सम्मान बरेली, राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान उ०प्र० लखनऊ द्वारा पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान, बाल कल्याण संस्थान खटीमा उत्तराखंण्ड़, इण्डो-नेपाल बाल साहित्यकार सम्मेलन'' खटीमा उत्तरांचल में सम्मानित.

विशेषांकः-बाल साहित्य समीक्षा कानपुर (मासिक पत्रिका)-मई 2004, विश्व स्नेह समाज, इलाहाबाद (मासिक पत्रिका) द्वारा नवम्बर 2009

विशेष उपलब्धिः उ०प्र० के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम पं० विष्णु कान्त जी शास्त्री द्वारा वृन्दावन में सम्मानित, महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल जी से राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में देश के विशिष्ट बाल साहित्यकारों के साथ भेंट, कई पाठ्य-पुस्तकों में बाल कविताएँ एवं बाल कहानियॉ सम्मिलित. यहॉ यह उल्लेख करना अत्यन्त आवश्यक है कि साहित्य की ओर मुझे प्रेरित करना, उसमें अभिरूचि पैदा करना, लिखने की प्रेरणा देना यह सब पतित पावनी, मॉ गंगाजी की असीम कृपा से ही सभंव हो सका है. श्री गंगा मैया के श्री चरणों में निम्न कविता को समर्पित करते हुए मैं उनके आशीर्वाद की कामना करना हैंः-

हे गंगा मैया-गंगा मैया।

विनती सुन लो गंगा मैया।।
बहुत दूर से आस लगाकर,
दर्शन को हम आये मैया।
हाथ जोड़कर तुम्हें पुकारें,
जीवन सफल बना दो मैया।।
राजा-रंक सभी भक्तों पर,
तुम रखती समभाव मैया।
सच्चे मन से जो भी आता,
झोली भरती उसकी मैया।।
साधु-संत औ गृहस्थ सब,
दरश-वरस को आते मैया।
शतशत नमन तुम्हें है मेरा,
विनती सुन लो गंगा मैया।
जीवन की अंतिम बेला में,
अपनी गोद सुलाना मैया।।

मानद उपाधिः-साहित्य श्री-साहित्य कला मंच, मुरादाबाद, साहित्य शिरोमणि -अ० भा० हिन्दी सेवा संस्थान, इलाहाबाद, बाल श्री-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान इलाहाबाद, हिन्दी भाषा भूषण'-साहित्य-मण्ड़ल श्रीनाथद्वारा राजस्थान द्वारा

-199-प्रथम तल, श्री राधा सिटी, सतोहा, मथुरा-281004 (उ०प्र०)

ममतामयी माँ

-सुरजीत सिंह साहनी,
कोटा, राजस्थान

'हे माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी' के अनुरूप ही ममतामयी माँ स्वय भूखी-प्यासी रह, अपना खून-तन जला, दुख-कष्ट झेल पसीना बहाती रहती है किन्तु अपनी संतान को अपने आंचल में इस प्रकार से ढ़क लेती है कि वहां तक तनिक भी मुसीबत अथवा आंच नहीं पहुच पाती. श्री गुरूग्रन्थ साहिब में माँ को स्नेह, प्रेम, त्याग, ममता एवं अनेकानेक गुणों का धारणी कहां गया है-'उतमों महि उतम' विशाल हृदय वाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण धरती माता 'पवण गुरू पाणी पिता माता धरत महत्' भाई गुरूदास जी द्वारा माँ को मोक्ष का द्वार खोलने वाली देवी कहां गया है- 'लोकवेद गुण गिआन विचुअरध शरीरी मोख दुआरी'. इसी प्रकार वेदों में पृथ्वी पर विचरित चार देवताओं में से प्रथम स्थान माता का है, उपनिषद में लिखा है-'मातृ देवों भव्, पितृ देवो भव, अतिथि देवो भव'. माँ शब्द का वह करूणामयी प्रतिरूप है जो आत्मा से निकलता है और आत्मा ही उसे उच्चारित करती है.

स्त्री एक बार माँ के रूप में जन्मी तो जीवनभर माँ ही बनी रहती है, कोई और उसका व्यक्तिव ले ही नहीं सकता क्योंकि संतान का जन्म और उसका पालन-पोषण माँ का विशेषाधिकार ही है. माँ होना सरल नहीं है, उसकी स्थिरता को हालात तो क्या प्रकृति भी कई-कई रूपों में चुनौती देती रहती है परन्तु माँ तो अपराजेय ही है उसके होसले के आगे तो इंसान ही नहीं अपितु कुदरत भी नतमस्तक है।माता को बच्चे का प्रथम गुरू कहां गया है 'मातृमान् पित्रमान् आचार्यवान् पुरूषों वेद' अर्थात् प्रथम गुरू माता, दूसरा गुरू पिता और तीसरा गुरू आचार्य है. महाभारत में वेदव्यास द्वारा माता को भूमि का प्रारूप कहां गया है. 'माता गुरूतरा भूमेः'. जीवन के हर क्षण, धन बल का उपयोग समर्पित है तुमको. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मानव के लिए 'माता' मति (शिक्षा) और पिता संतोष 'मति माता संतोखु पिता सरि सहज समायउ'. गुरूनानक देव जी के अनुसार परिवार में माँ का स्थान सर्वोच्चता लिए हुए उस कमल फूल के समान जिसकी सुगन्ध से घर परिवार आंगन महक उठता है. गुरू गोविन्द सिंह जी ने 'अमृत' में मिठास लाने के लिए ममतामयी गुरू माता से मीठे बतासे मिलवाकर मातृत्व जागृत किया और माता का अभिवादन कर कहां 'भलो भयो तूं चल कर आई, नीर माहि पाई'. अनुदान और वरदान रूप जो शक्ति आपसे पाई है.

माँ को समय-समय पर परखा जाता है और हर कसौटी पर वह सदैव खरी उतरती आई है।परिवार में मुसीबत चाहे कितनी ही कड़ी धूप बनकर क्यों न आए किन्तु माँ के आंचल को भेद कर संतान तक पहुचपाना बहुत मुश्किल है. माँ प्रकृति का वह अनमोल हीरा है जिसकी कोख से मानवता जन्म लेती है और जिसके स्पर्श मात्र से ही बड़े से बड़े दुख-दर्द स्वतः ही ठीक होने लग जाते है. माँ के दो हाथ-दी आँखे ही सबको दृष्टव्य रूप में तो उसके कई हाथ-कई आंखो कार्यरत होती है जो कि संतान के जीवन सजाने-सवारने के कार्य में निर्बाध सहायक हो, दूर बैठी अपनी संतान को माँ देख-सुन सकती है. स्वयं अस्वस्थ होने पर भी माँ परिवार का भोजन खुशी-खुशी बना देती है और अपने दुल्हन प्यार से बड़ी से बड़ी चिन्ता से उबार लेती है. माँ स्वयं अति सुन्दर और कोमल फूल की भांती कोमल हैं किन्तु वह इतनी अधिक ममतामयी एवं बलशाली है कि उसके नेत्रों में बच्चों के लिए तो भावपूर्ण

करूणामयी जल है किन्तु शत्रुओं के लिए तो ज्वलंत ज्वाला ही है.

भारतीय संस्कृति में नारी का सदैव गौरवपूर्ण स्थान रहा है जहाँ माता के रूप में सभी धर्म शास्त्रों एवं धर्म ग्रंथों में नारी की उपमा कर अभिनन्दनीय कहा गया है। वेदों में तो कहीं-कहीं माँ को जीवन निर्मात्री 'माता निर्माता भवति' कहकर सम्बोधित किया गया हैं. इंसान के जीवन में माँ का रिश्ता पवित्र, अति उत्तम एवं महत्वपूर्ण रहा है क्योंकि जन्म से पूर्व ही माँ और बच्चे के रिश्ते के तार आपस में जुझे हुए रहते है. माँ निरन्तर नौ माह तक अपनी कोख में बच्चे को अपने रक्त से सिंचित कर पाल-पोस 'एक शरीर दो जान' बन अपनी ममता लुटाती रहती है. संसारिक रिश्तों में एक मात्र माँ का ही ऐसा रिश्ता है जिसकी उपमा एवं वर्णन विभिन्न धर्मो एवं धर्म ग्रन्थों में सर्वाधिक की गई है. ऋगवेद में माता-पिता को परमेश्वर कहा गया है 'त्वं हि नः पिता, त्वं माता, शत क्रतों बभूबिथ'। कर्म पुराण में माँ के समान कोई अन्य नहीं कहां गया है-'नास्ति मातृ समं देवम्'।

स्त्री एक बार माँ के रूप में जन्मी तो जीवनभर माँ ही बनी रहती है, कोई और उसका व्यक्तिव ले ही नहीं सकता. माँ होना सरल नहीं है, उसकी स्थिरता को हालात तो क्या प्रकृति भी कई-कई रूपों में चुनौती देती रहती है परन्तु माँ तो अपराजेय ही है उसके हौसले के आगे तो इंसान ही नहीं अपितु कुदरत भी नतमस्तक है।

ममतामयी माँ वात्सलय और निश्चल सच्चे प्रेम की जीती जागती मूरत है जो कि नऐ जीवन की जन्मदात्री, पालनहार है। श्रीगुरूग्रन्थ साहिब में माँ को सर्वोच्च मार्ग दर्शक, सर्वश्रेष्ठ एवं वन्दनीय कहा गया है क्योंकि वही बच्चे का प्रथम शिक्षक होती है, 'माँ' एवं 'ईश्वर' को पिता के रूप में गुरूवाणी में प्रतिबिम्बित किया गया है. इस जग महि पुरखु एक है होर सगली नारि सबाई, जननी की उपमा सौ किउ मंदा आखीअे जितु जमहि राजान'' अर्थात राजा महाराजा शूरवीरों, ऋषियो मुनियों की जन्मदात्री माँ पूजनीय है क्योकि माँ इसान का ईमान है और वह बत्तीस गुणों 'बतीह सुलखणी' सेवा, दया, सयंम, उदारता, निष्कपटता, धैर्य, ममता, उद्यम इत्यादि गुणों की धारणी है 'मति माता, संतोखु पिता सरि सहज समायउ' गुरू नानक देव ने गुरूवाणी में अंकित किया है. धरम चलावन संत उबारन, दूसट सभन को मूल उपारन।

माँ जिन्दगी के सभी रिश्तों-संबंधों से परे सुहृदयी, ममतामयी, सच्ची सलाहकार एवं मार्गदर्शक शिक्षक है. कुरान और हदीस में निर्देशित किया गया है कि माँ (वालिदा) की आज्ञा पालन करते हुए सेवा करते रहें क्योंकि 'जन्नत' माँ के कदमों तले ही है. जैन धर्म ग्रन्थों के अनुसार माँ का तात्पर्य ममता-प्रेम से है, संतान ने उत्पति के पूर्व जिस अद्वैत का अनुभव किया वह मातृत्व का अविस्मरणीय क्षण ही है, अद्वैत जब द्वैत बनता है तब दो हो जाते है एक माँ और दूसरा संतान. बाईबल में ईश्वर के स्नेह की तुलना माँ के प्यार से की गई है कि जिस प्रकार ईश्वर से शान्ती मिलती है उसी प्रकार माँ अपने बच्चों शान्ती प्रदान करती है इसलिए माँ का आज्ञाकारी रह उसका अनुसरण करते हुए किसी प्रकार का कष्ठ माता को नहीं पहुचाना चाहिए. जहां मेडिकल साईन्स का प्रभाव सीमित हो जाता है वहां माँ का आंचल सुरक्षात्मक है जो हर कठिनाई से उबारने में सक्षम है और माँ के दर्शन मात्र से ही मानवता कृत-कृत हो उठती है. माँ को हर स्तर पर मुसीबतें तो घेरती रहती है. किन्तु उसका हृदय इतना विशाल है जो सदैव दुआ मांगने से पीछे नहीं हटता और हाथ आशिर्वाद देने से रूकता नहीं. माँ शब्द को न तो मस्तिष्क बुनता है और न ही जंबा बखान कर सकती है क्योंकि वह तो स्वयं ही ब्रह्म है, विज्ञान है, प्रकाश है, ज्ञान है। साधु कहों सुन लैहु सभै, जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभु पाई.

देवी

-सुखवर्ष कंवर 'तन्हा', नई दिल्ली

दफ्तर से छुट्टी का समया था. तीन-चार जवान लड़कों में आपस में खुसफुसाहट हो रही थी. उनमें से एक लड़का अनाड़ी था. बाकी के शायद इन सब बातों के लिए तैयार थे. चलो यार आज इस नये पंछी को वहां की सैर करा देते हैं. रोज सुबह दफ्तर में आ वह अपने काम से इस कदर डूब जाता कि उसे सिर उठाने की फुरसत नहीं होती थी. क्योंकि उसे मालूम था कि घर में उसके बूढ़े माता-पिता को इसी बेटे की आमदनी का सहारा है. अभी तो इसकी नयी-नयी नौकरी लगी थी. यह दिन-रात मेहनत कर जीवन में आगे बढ़ना चाहता था.

'अरे श्याम अभी तो तुम्हें इस दफ्तर में आये कुछ ही महीने हुए हैं. अभी तो अपने आप को काम में तथा मेहनत उलझाने लगे हो. अपने ऊपर जितना बांध लोगे उतना ही तंग होओगे. यह अफसर लोग तुम्हें पूरा गधा बना देंगे.

'तो ठीक है यार खाली बैठ कर बेगार खाना भी तो ठीक नहीं होता.'

'हां देख हम तो थोड़ा बहुत काम कर आराम फरमाते हैं. तू तो सिर दर्द मोल ले रहा है. चल कहीं घमने चलते हैं.'

'नहीं यार अभी तो छह बजने में आधा घंटा बाकी हैं. हम कब तुम्हें अभी कह रहे हैं. चलो छुट्टी के बाद चलेंगे.' फिर वह सब आपस में एक दूसरे को देख कर हंस दिए.

'चलो यार माना तो सही. इस नये पंछी को वहां की सैर करा देते है. तुम्हें क्या पता यहा नया पंछी है या पुराना. क्या पता यह छूपा रूस्तम हो. चलो आज पता लग ही जाएगा.'

श्याम इस बात पर हैरान होता था कि यह रोज चार बजने के बाद आपस में न जाने क्या खुसर-फुसर करते हैं. सब इकट्ठें होकर दफ्तर की बिल्डिग से बाहर निकले-चल यार तुझे एक चीज दिखाते हैं. पहले वह भी थोड़ा हिचकिचाया लेकिन फिर उनके साथ चल पड़ा. बातें करते हुए वह सब रेड़ लाइट एरिया में पहुंए गए. वहां का हिसाब-किताब देख कर श्याम थोड़ा घबरा गया. यह तो 'रेड़ लाईट' एरिया है. मुझे कहां ले आए.'

'चल अन्दर तो चल उसके साथियों ने उसे ऊपर की तरफ खींचते हुए कहा, 'तू चल तो यार तुझे एक बढ़िया चीज दिखाते हैं.'

ऊपर जाकर बाकी के तीन अपने-अपने काम में व्यस्त हो गये. इसे भी एक सुन्दर सी लड़की के पास छोड़ गए. उसकी सुन्दरता देखकर कोई भी मोहित हुए बिना नहीं रह सकता था. वह उसे छूने की कोशिश करने लगा. लेकिन न जाने अचानक क्या हुआ वह सुन्दर लड़की शायद भांप गई कि यह नया पंछी है. उसकी सुन्दरता और आकर्षक शरीर देख उस लड़की ने कुछ निर्णय लिया और कहा, मैं तो काठ की हांड़ी हूं. एक बार चूल्हे पर चढ़ गई तो फिर किसी काम की नहीं रहती. तुम मुझे अच्छे घर के लगते हो स्वास्थ्य भी ठीक लगता है. तुम जीवन में किसी अच्छे से खानदान की अच्छी से लड़की से शादी कर अपना घर बसा लो. देखो तुम इस कीचड़ में मत गिरो. क्यों अपनी जवानी बरबाद करना चाहते हो. तुम मुझे नेक लड़के लगते हो. इन गलियों मे बर्बादी के सिवाय कुछ भी नहीं. क्यों कुछ लोगों के कहने पर गलत स्थान पर आ गए हो. मैं तो चाहूंगी कि तुम वापिस लौट जाओ इसलिए यह लो अपने पैसे और जीवन में कभी भी ऐसी गलियों में मत आना. चाहे तम्हें कितना भी कोई लालच दे'

उस लड़की ने कहा, मैं तो काठ की हांड़ी हूं. एक बार चूल्हे पर चढ़ गई तो फिर किसी काम की नहीं रहती. तुम मुझे अच्छे घर के लगते हो स्वास्थ्य भी ठीक लगता है. देखो तुम इस कीचड़ में मत गिरो.

उसे हैरान परेशान छोड़ कर वहां से मुड़ कर वह दूसरे कमरे में चली गई. कुछ देर के लिए यह ठगा सा खड़ा रहा उसने सिर झुका लिया फिर उसकी सच्चाई और नसीहत उस लड़के ने मान ली वह वहां से अपने दोस्तो को बिना बताएं ही लौट गया. फिर जीवन भर उसने ऐसी गलियों का कभी रूख नहीं किया. वह उस सुन्दरी का अति शुक्रगुजार है कि उसने उसे कीचड़ में गिरने से बचा लिया. जिन्हें लोग गिरा हुआ समझते है वहीं गिरने से बचाती भी है. वह नेक दिल भी होती है. उसे ख्याल आया कि हो सकता है किसी मजबूरी की वजह से इस कीचड़ में गिरी होगी लेकिन मेरे लिए तो वह देवी बन कर उभरी है. ऐसा सोचता रहा वह जीवन भर.

कहानी

चींटी की सीख

-वेद प्रकाश कंवर, नई दिल्ली

गांव की कच्ची सड़क पर एक साधु गांव की तरफ भिक्षा मांगने जा रहे थे. सामने से उस सड़क पर एक बोरों से लदी बैलगाड़ी आ रही थी. चालक उसे तेज चला रहा था. अचानक साधु की नजर चींटी पर पड़ी जो एक तरफ से उस सड़क के बीच पहुंच चुकी थी और बड़ी तेजी से दूसरी तरफ दौड़ी आ रही थी जिधर साधु जी थे. बेचारी चींटी ने मुश्किल से हाँफते-हाँफते सड़क पार कर रही थी कि बैलगाड़ी आगे निकल गयी. चींटी सड़क के दूसरे छोर पर पहुंच कर रूक गई और थोड़ा चैन से सांस लेने लगी.

साधु ने कहा, 'चींटी जी तुम इतना तेज क्यों भाग रही थी? अभी भी तुम हाँफ रही हो.'

'साधुजी आप तो देख ही रहे थे कि बैलगाड़ी तेजी से सामने से आ रही थी. मैं या तो बैलों के पांव तले आ कर या बैलगाड़ी के पहियों के नीचे आकर मसल-कुचल दी जाती तो मर जाती न.'

'तो क्या होता? तुम्हारी इतनी छोटी सी काया किस काम की. मर जाती तो शायद कोई दूसरा अच्छे रूप में जन्म मिल जाता.'

'साधु जी, क्या बात करते हैं आप? जैसे आपके शरीर में आत्मा वैसे ही तो मेरे शरीर में. परमात्मा जी ने मुझे जो भी काया दी है निश्चय ही उसका कोई कारण होगा. और फिर मुझे अपना जीवन अत्यंत सुंदर और बेहद पंसद है. अपना जीवन सुरक्षित रखना मेरा जन्मसिद्ध अधिकार ही नहीं बल्कि मेरा परम कर्तव्य भी है. दूसरी बात आप क्या जानें गृहस्थ आश्रम की

सुंदरता. मेरे जीवन के साथ जुड़े हैं मेरे पति और हमारा आपसी प्यार. हमारे नन्हें-नन्हें बच्चे और उनका प्यार-दुलार. हमारे बूढ़े माता-पिता और उनका स्नेह और आशीर्वाद.

वे अपनी-अपनी उमर में काम करने में असमर्थ हैं. मैं जवान हूं. उनके लिए खाने की सामग्री लेकर जा रही हूं. क्या मेरा कर्तव्य नहीं बनता कि मैं उनकी यथाशक्ति सेवा करूं. हां, मैं तो यह मानती हूं कि जिसने गृहस्थी अच्छे से निभा ली उसने इसी संसार से स्वर्ग पा लिया. शाम ढ़लने को है. कृपया मुझे जाना है. वे मेरी प्रतीक्षा में होंगे' यह सब बोल चींटी ने फिर से तेज गति पकड़ ली और चलती बनी.

साधु जी उसे एकटक देखते ही रह गए. जब तक वह उनकी आंखों से ओझल नहीं हो गई. फिर संभलकर, अपने-आप से बतियाने लगे.

'धन्य हो चींटी देवी जी. आप धन्य हो. हां कोई गृहस्थ भी साधु संत हो सकता है. मैं मूर्ख अपने जीवन के संघर्षों से हार मान अपने बूढ़ें माता-पिता, अपनी पत्नी और बाल बच्चों को बोझ समझ कर साधु बनने चला था. केवल गेरूआ वस्त्र पहनने से कोई साध‌ु नहीं बन जाता. साधु तो वह होता है जिसका मन निर्मल हो, कर्म और कर्तव्य से शुद्ध हो. जो उपकार भाव से भरा हो और अपने गृहस्थ आश्रम के प्रति कर्तव्यबद्ध हो, उसी चींटी की तरह.'

यह वचन बोल साधु तुरंत अपने घर लौट गया.

रास्ते में अनेकों बार चींटी का गुणगान करते हुए वह आकस्मिक बतियाया, 'सीख किसी से भी मिल जाए चाहे कोई कितना ही छोटा क्यों न हो. सीख तो सीख होती है जिसे मैं सच्चे मन से धन्यवाद सहित ग्रहण करता हूं. आप धन्य हो चींटी देवी। आपने मेरी आंखें खोल दीं.....मेरा जीवन मार्ग दर्शक बनी.'

जल हर पल

पल-पल है तेरी इन्तजार
हमारी सदा जरुरत है जल-जल
जल नहीं हैं तो किसने देखा पल-पल
जीव जन्तू पेड़ पौधा जल करती हल-चल

सब का पेट भरता हैं किसान
जल नहीं है तो कैसा चलायेगा हल
नीर पानी अगर नहीं है तो
कहॉ से पेड़ पौधा में आयेगा फल

अगर सारा जहान में जल नहीं
तो घर में कहॉ से आयेगा नल

कैसी करेगी नाद जल खल-खल
नदियॉ, झरना, कुँआ नहीं है तो जल

जल सब भोजन से शरीर में
आता है ताकत दम बल-बल
अगर संसार में परियावरण नहीं
तो कैसी होगी आने वाली कल

होली में पिचकारी सब मारते है
भर-भर के कई रंग जल-जल
प्यार, मोहब्बत चाहत का रंग
गुलाल के संग चेहरा मल-मल

सदा हमेशा जल को बचाना है
कभी न हो कम जल का तल
जल ही जीवन है पानी बचाने के लिए
हर जग मानव में बनाये अपना दल

जल को बचाना शुद्ध, निर्मल विचार रखना
जल ही जीवन का आधार है सब में हर पल
मधुप निराला-मोहनी चंचला की प्रार्थना
मन हो विश्वशान्ति सतनाम के पक्ष में चल-चल

-मनिहार सिंह निराला
जॉजगीर चाम्पा, छत्तीसगढ़

आज का आदमी

बचपन में
देखा भी/ महसूस भी किया
आज लोगों को कहते
सुनते भी
कभी/यह दुनिया
बहुत अच्छी थी
तब घर/मन्दिर जैसे
हुआ करते थे
घरों में ममता-दुलार-प्यार
सहनशीलता और त्याग जैसे
कई सारे सदाबहार खुशबूदार
फूल खिलते
मीठी-मीठी/मदहोश करती
सुगंध बिखेरते
आदमी को ताकतवर बनाते
जीने की चाह जगाते
त्याग की राह दिखाते
आदमी/औरों की खातिर
मर-मिट जाता
इधर लोगों ने महसूस किया
आज दुनिया/बहुत बदल गई
आज घर/मन्दिर जैसे नहीं
कुरुक्षेत्र का मैदान लगते
अब घरों में
खुशबूदार सदाबहार
ममता-दुलार-प्यार के
फूल नहीं खिलते
क्रोध-जलन-विवाद
के कांटे ही कांटे मिलते
मन छलनी करते
खो गई फूल की कोमल छुअन
नसीब में
कांटों की चुभन ही चुभन,
जो आदमी को कमजोर बनाते
स्वार्थी बनाते/मन घायल करते
तभी तो/आज का आदमी
औरों के सुख खातिर नहीं जीता
निज सुख खातिर/औरों को
मौत से बदतर
जिन्दगी बांटता
आओ/कोशिश तो करें
खुद को बदल डालने की
औरों की खातिर जीने की
प्रभु से नाता जोड़े
दुआ मांगे
आदमी को नेक राह दिखा
आदमी के दिल में/फिर से
ममता-दुलार-प्यार
सहनशीलता जैसे
फूल खिल उठें/खुशबू महके
जिन्दगी जीने लायक बने।

-के.एल.दिवान, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

परिवर्तन

पहले सिर झुकता था/श्रद्धा से
अपने से बड़ो के आगे
करते थे स्पर्श चरणों का
पाकर आशीर्वाद
हर्ष से भर जाता था/मानुष मन
अब रह गई सिर्फ औपचारिकता
मात्र त्रिष्टता के नाते
दुआ सलाम ही रह गया/न तो हृदय
करते सम्मान
न ही पाते आशीर्वाद
चरण स्पर्श कर
अब सम्बंधों में
मात्र औपचारिकता रह गई
पता नहीं
ये औपचारिकता भी/आखिर कब तक
बची रह पाएगी।

-सूरज तिवारी 'मंगल'
मुंगेली, छत्तीसगढ़

भारत की धरती

गोमाता सी कामधेनु धरती है भारत की,
जगहितकारिणी सभी का मान करती।
सारी वसुधा को मानती है अपना कुटुम्ब,
मातृभाव का सौहार्द का सम्मान करती।।
यदि कोई राष्ट्र-अस्मिता पै वार करता तो,
काली बन रक्तबीजों का गुमान हरती।
सारा विश्व मानता है पहिचानता है इसे,
मानवता की ये जान वान शान धरती।।

सैनिक-सम्मान

वतन के सैनिकों के शौर्य पे भी शक जिन्हें,
ऐसे नेताओं को भला कौन नेता कहेगा।
जिन्हें राष्ट्र-सुरक्षा की नीति का न मान उन्हें,
देश राष्ट्रघाती नीति का प्रणेता कहेगा।।
जिन्हें देश से बड़ी दलों की राजनीति उन्हें,
राष्ट्रघाती मंच का ही अभिनेता कहेगा।
सैनिको तुम्हारा तो सम्मान है अतुल्नीय,
शत्रु भी तुम्हें तो वीर व विजेता कहेगा।

-लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर'
ईशानगर, छतरपुर, म०प्र०

सूर्य से नजरें मिलाईये

बेकार में किसी की हंसी मत उड़ाइये
पलकों से पहले आंसू के मोती उठाये
फूलों की लाश देख के रोए हैं बागवॉ
फिर से कोई चट्टान पे कोंपल उगाइये
इतरा रहा है चाँद ये रूप देख के
सुनसान चाँदनी पे अकेले न जाइये
हाँ मेरे लिए जान लुटाना तू बाद में
पहले किसी के घाव पे मरहम लगाइये
सृजन की पहली शर्त है तस्वीर बदलना
साहस जुटा के सूर्य से नजरें मिलाइये
इन्सानियत से बढ़ के नहीं धर्म विश्वजी
फिर इसके बाद मंदिरों-मस्जिदों में जाइये।

-जगन्नाथ विश्व, नागदा, म.प्र.

जन्मान्तर

जन्म-जन्म की रचना का है कुदरत का यह खेल,
अलग-अलग सब रूप नहीं मिलता कोई मेल।
नहीं मिलता कोई मेल अजब ईश्वर के खिलोने,
कोई कैसा कोई कैसा भाँति-भाँति के सलोने।
कभी किसी की पत्नी बनती कभी किसी का होता पति,
प्रकृति की माया का होता ऐसी यह जन्म-न्म की गति।
जन्मों की नहीं कोई गिनती होता है कितनी बार,
संख्या के परे असंख्य नाम धाम नहीं है कोई शुमार।
जग की रीति अनोखी कोई किसी का पुत्र किसी की माता,
अदल-बदल कर तेरे मेरे बनते बिगड़ते हैं नाता।
युग-युग की परम्परा है किसी की बहिना किसी का भाई,
दुनिया की रिवाजों में भगवत ने किसी की पुत्री बनाई।
किसी जन्म में कीभी कोई किसी का रिश्ता बन जाता,
प्रभु की नगरी में पता नहीं कौन क्या-क्या बन जाता।
पुनः पुनः होने का जन्म के अन्तर को सारा संसार मानता,
किस घर की चौखट पर किसका जन्म है कोई नहीं जानता।
अन्तर केवल इतना है कि चोला का होता है परिवर्तन,
आत्मा अमर है नूतन-जन्म से रूपान्तरण का परिवर्धन।
परमेश्वर की लीला देखों कौन किसका पिता बन गया,
जन्मान्तर का भेद बताकर क जन-जन का मंगल कर गया।

-श्रीकृष्ण अग्रवाल 'मंगल'
कोलकत्ता, पंश्चिम बंगाल

दोहे

बुझी हुयी वे राख फूंककर, जला रहे हैं अंगीठी,
आरक्षण की खीर आज तक, जिन्हें लग रही मीठी।
पग-पग अतिक्रमण लीलीयें, हर पद है आरक्षित,
हर इक छोटी मछली मानो, बड़ी से है अब भक्षित।
कलयुग में किरकेट का, इक रन गिन जाय,
किसान कर रहे खुदकुशी, शासन शतक छुपाय।
बता रहा हूँ आपको, घातक है दलतन्त्र,
प्रजातन्त्र का भ्रूणवध, करता आया हस्त्र।
करता आया हस्त्र, इसी ने बापू को मारा,
खण्ड़-खण्ड़ कर दिया हे भारत, लूटा देश है सारा।

-पं० मुकेश चतुर्वेदी 'समीर'
सागर, मध्य प्रदेश

लोकतंत्र बनाम जूतातंत्र कृति का लोकार्पण

शक्तिनगर. हास्य-व्यंग्यकार अजय चतुर्वेदी 'कक्का' की 'लोकतंत्र बनाम जूतातंत्र' नामक कृति का लोकार्पण एनटीपीसी शक्तिनगर में एनटीपीसी सिंगरौली के महाप्रबंधक टी०के० राव द्वारा किया गया. इस अवसर पर अपर महाप्रबंधक मानव संसाधन ए०के० जाडली, उप महाप्रबंधक-मा.सं. चरनजीत कुमार इत्यादि उपस्थित रहे. कृति के संदर्भ में डॉ० निर्मल शुक्ल, राजीव ओझा, डॉ० चन्द्रशेखर तिवारी, डॉ० मानिक चन्द्र पाण्डेय और शिव करण दुबे वेदराही ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए कृति की सराहना और कृतिकार को साधुवाद दिया.

कृति के लोकार्पण के बाद कवि सम्मेलन का आगाज वाराणसी से पधारी कवयित्री विभा सिंह की वाणी वंदना से हुआ. मेरठ से पधारे मनोज कुमार मनोज ने -'प्यार के सीप में मेरे ऑसू गिरे, तेरी यादों को छू सुख के मोती बने, एक हिचकी ही बस दे गई है पता, प्यार के शामियाने वहाँ भी तने' जैसे मुक्तकों और गीतों से समा बाँधा। शिवकरण दुबे वेदराही 'कैसे कह दूँ देश की मिट्टी हमें प्यारी नहीं' और विजय लक्ष्मी शुक्ला, लखनऊ से आये डॉ० निर्मल शुक्ल, डॉ शिव शंकर मिश्र सरस, कमलेश्वर कमल, विभासिंह, चन्द्रशेखर तिवारी, अभय शंकर दुबे भी सराहे गये. डॉ० राजकरण शुक्ल, अजय चतुर्वेदी कक्का ने भी अपनी रचनाओं से लोटपोट किया.

संचालन डॉ० राजकरण शुक्ल ने तथा धन्यवाद ज्ञापन अजय चतुर्वेदी 'कक्का' ने व्यक्त किया.

हिन्दी में सर्वाधिक अंक लाने वाले छात्र-छात्रायें सम्मानित

शाहजहांपुर, उ.प्र. में पुवायां इण्टर कालेज के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यालय के चयनित चार इण्टर कालेजों के छात्र-छात्राओं को हिन्दी में सर्वाधिक अंक लाने के लिए मुख्यअतिथि डा. रानी त्रिपाठी प्राचार्या सावित्री देवी महिला महाविद्यालय पुवाया, विशिष्ट अतिथि डा. सुधीर गुप्ता संरक्षक प्रेरणा परिवार अरुण सक्सेना, अध्यक्षता पुवायां इण्टर कालेज पुवायां के प्रधानाचार्य श्री जयप्रकाश मौर्य व आयोजन के संयोजक साहित्यकार संपादक व प्रवक्ता शशांक मिश्र भारती ने हिन्दी प्रतिष्ठा व हिन्दी गौरव सम्मान से सम्मानित किया. विद्यालय स्तर पर हाईस्कूल व इण्टर में हिन्दी में सर्वाधिक अंक लाने वालों को प्रशस्त पत्र साहित्य व ५०१/रुपया नकद प्रदान किया गया। सम्मानित होने वालों में रा.बा.इ.का. पुवायां से डिम्पलगुप्ता व कु.माधुरी पुवायां इण्टर कालेज पुवायां से सूरज कुमार व हैदर अली, प्रेमचन्द्र स्मारक इ.का.पुवायां से कु. कीर्ति सिंह व अभय कुमार मिश्र और सरस्वती विद्यामन्दिर इ.का. पुवायां से अजय प्रताप सिंह व अमरेन्द्र सिंह क्रमशः हाईस्कूल तथा इण्टर के रहे.

मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा कि हिन्दी एक दिन की नही साल भर की भाषा है इससे भागने की नहीं दिल से बसाने की आवश्यकता है। विशिष्ट अतिथि ने अहिन्दी प्रदेशों में भी हिन्दी के प्रचलन की चर्चा की. कार्यक्रम को शिक्षक मानवेन्द्र सिंह, डा.राकेश मिश्र ने भी सम्बोधित किया. प्रेरणा परिवार के संस्थापक विजय तन्हा के संचालन में हुए आयोजन में बृजेश कुमार, संजय अकेला, रमेश राही, चक्रपालसिंह, राजीव राजे सहित अनेक अभिभावकों छात्र-छात्राओं आदि ने भाग लिया। अन्त में सभी के प्रति आभार अध्यक्षता कर रहे पुवायां कालेज के प्रधानाचार्य ने व्यक्त किया. उक्त जानकारी एकांशी शिखा हिन्दी सदन बड़ागांव शाहजहांपुर उ०प्र० ने विज्ञप्ति के माध्यम से दी.

१७वॉ तुलसी सम्मान अलंकरण समारोह सम्पन्न

मध्यप्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी द्वारा १७ नवम्बरर को अपना १७ वां तुलसी सम्मान-अलंकरण समारोह भोपाल में सम्पन्न हुआ.

इस सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि म.प्र. साहित्य अकादमी के निदेशक व साहित्यकार डॉ.उमेश कुमार सिंह, अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. देव शर्मा आर्य जी तथा विशिष्ट अतिथि श्री युगेश शर्मा जी वरिष्ठ साहित्यकार रहे. अकादमी के अध्यक्ष डॉ.मोहन तिवारी आनंद ने अपने स्वागत भाषण में अकादमी की गतिविधियों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला.

कार्यक्रम के प्रथम चरण में साहित्यकारों की कृतियों का लोकार्पण किया गया जिनमें अकादमी द्वारा प्रकाशित स्मारिका, श्री अशोक कुमार तिवारी की काव्य कृति काव्य धारा, डॉ.देवदत द्विवेदी 'दत्त' के दोहा संग्रह 'सबरी के बेर' विश्वनाथ शर्मा विमल की कृति-काव्य प्रसून का लोकार्पण किया गया. इसके बाद साहित्यकारों का सम्मान किया गया. सम्मानित होने वालों में डॉ. नलिन-तलवंडी कोटा राजस्थान, डॉ. दीप्ति गुप्ता-पुणे, महाराष्ट्र डॉ.सुधा चौहान इन्दौर, म.प्र., डॉ.प्रेमबहादुर कुलश्रेष्ठ 'विपिन'-अलीगढ़, उ.प्र., श्री बालकृष्ण पाण्डेय-इलाहाबाद, उ०प्र०, डॉ.सुरचना त्रिवेदी-लखीमपुर खीरी, उ.प्र., डॉ. प्रभुलाल चौधरी-उज्जैन, म.प्र., डॉ. डी. डी.ओझा-जोधपुर, राजस्थान, श्री नरेन्द्र श्रीवास्तव-नरसिंहपुर म.प्र., श्री हेमचन्द्र सकलानी देहरादून- उत्तरांचल, श्रीमती सलमा जमाल-जबलपुर म.प्र, श्री चन्द्रप्रकाश जायसवाल भोपाल, श्रीमती सीमा शर्मा-लखनऊ, श्री जयप्रकाश सूर्यवशी, नागपुर महाराष्ट्र, श्री जी.आ. के.रेड्डी, बंगलौर कर्नाटक, श्री विजय तन्हा-शाहजहाँपुर उ.प्र., श्री राम सिंह सैनी 'सुमन'-बिजनौर उ०प्र० सम्मानित हुए.

कार्यक्रम के मुख्यअतिथि डॉ.उमेश कुमार सिंह ने अपने उद्बोधन में तुलसी साहित्य अकादमी के साहित्यिक कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि तुलसी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ.मोहन तिवारी आनंद तथा उनकी पूर्ण टीम पूर्ण मनोयोग से साहित्य सृजन तथा हिन्दी की सेवा में लगी हुई है. आज सारे हिन्दुस्तान में तुलसी साहित्य अकादमी और उसकी पत्रिका कर्मनिष्ठा की चर्चा हो रही है. अकादमी की इस उत्कृष्ट साहित्य सेवा के लिए डॉ.आनंद तथा उनके साथियों को बधाई देता हूँ.

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ.देव शर्मा आर्य ने कहा-मैं तो अकादमी के अध्यक्ष डॉ.आनंद को वर्षो से जानता हूँ वे न अकेले तुलसी साहित्य अकादमी के कार्यक्रम ही करते हैं बल्कि वे इसी निष्ठा और लगन से अन्य साहित्यिक संस्थाओं के आयोजनों में लगे रहते है. सारे हिन्दुस्तान में यह अकादमी अपनी तरह की अकेली है जो साहित्यिकारों से बगैर एक पैसा सहयोग लिए उन्हें प्रोत्साहित करती है और उनकी कृतियों का प्रकाशन करती है.

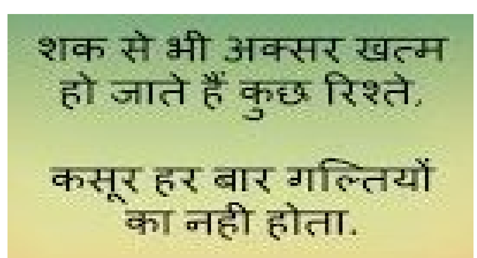

द्वितीय सत्र में काव्य पाठ हुआ जिसका जिसमें सभी सम्मानित साहित्यकारों ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं का पाठ किया. देर रात तक चले इस साहित्यिक कार्यक्रम ने लोगों को आनंद विभोर कर दिया.

कार्यक्रम व कवि सम्मेलन का संचालन चन्द्रभान राही' ने किया। कार्यक्रम के अंत में अशोक गौतम घायल ने सभी के प्रति आभार प्रदर्शित किया.

धारावाहिक लघु उपन्यास

निर्भया

भाग-27

✍**अंकिता साहू,** इलाहाबाद, उ.प्र.

ओके ओके निर्भया......(प्रगति, संकल्प अपने सैकड़ों दोस्तों के साथ आते है।)
निर्भया-आप लोगों के साथ की वजह से एक महीने में काफी हद तक हमारी लड़ाई को बल मिला. इतने दिनों मे मैने काफी पोस्टर्स चार्ट बनाये है, जिसे मै इस शहर के हर दीवारों पर लगाना चाहती हूँ, उसके द्वारा कुछ संदेश भेजना चाहती हूँ.
यूथ- अरे दीदी इतने सारे पोस्टर्स देखूँ तो. (पोस्टर्स देख कर सचमुच सभी के गले से सिसकियों की आवाज सुनाई देने लगती है।) कुछ पोस्टर्स मे एक माँ के गर्भ में बच्चे का पलना दिखाया गया, कुछ में बच्चे को लेकर माँ का सपने बुनना, कुछ में एक लात जो माँ के गर्भ पर पड़ रहा है, कुछ में गर्भ से निकालकर मार दी गई बच्ची का लहुलूहान शव...कुछ में बच्ची के तुतलाहट भरे स्वर में 'मुझे माल दिया, मेरे पापा ने अब मै कैचे आऊँगी माँ के पाछ? कैसे बात कलूंगी? माँ! छे कैछे? उनके आँखो से छपने देखूँगी. जिसने मुझे माला, वे अब मले प्लीज मेरी माँ को इंसाफ दिलाओं.
माँ जोर-जोर से रोने लगी ये सब देखकर अतुल के आँसू रूक नहीं रहे थे, उसने अपनी बहन के कदमों में जाकर अपना सिर टिका दिया और रोने लगा. सारे खड़े लोगों ने भरी आँखों और अटकी सिसकियों के साथ निर्भया और उसकी स्वर्गीय बेटी को सलाम किया, अपर्णा, प्रगति निर्भया के गले लग गयी. निर्भया व्हील चेयर लेकर अपने हाथों से चलाकर पहला पोस्टर्स दीवार पर लगाती है. पूरे लोग जाकर पूरे शहर में पोस्टर्स लगाते है. शहर में देखने वाले हर लोग जब पोस्टर्स देखाते है तो यही दुआ करते है कि बच्ची को इंसाफ मिले. एक छोटी सी बच्ची पोस्टर्स पर किस करके यही बोली चिन्ता मत करो तुम जीतोगी. राघव के तरफ के लोग भी यह देखकर पिघल गये. निर्भया घुटनों पर रेंग-रेंग कर पोस्टर्स लगाने की कोशिश करती है.
अपर्णा- निर्भया कल केस है तेरा!
निर्भया-हाँ अपर्णा तू मेरे लिए एक और काम कर सकती है आज. पता नहीं कल के बाद मेरी या शायद हमारी जिन्दगी में क्या बदलाव आये.
अपर्णा-तू परेशान मत हो, सब ठीक होगा. और क्या करूँ तेरे लिए बता ना?
निर्भया- तू आज रात मेरे पास रूक जा. हम दोनों आज साथ बैठकर बात करेगें.
अपर्णा-बिल्कुल गम्भीर हो जाती है. गम्भीरता से कहती है हाँ जरूर मै रूकूँगी. अभी जाती हूँ और माँ से बता कर रात में आ जाऊँगी. ओके.
निर्भया-ठीक है तू जा अभी लेकिन आना जरूर.
शाम को अतुल और माँ निर्भया के पास आकर घण्टों बैठते है.
अतुल समझाता है अपनी बहन को कि दीदी डरो मत, पूरी शहर या शायद पूरा देश आपके साथ है. साथ ही माँ का आशीर्वाद, भाई का सहारा, दोस्तों की दोस्ती, लोगों की दुवायें सब आपके साथ है परेशान मत हो कल की सुबह हम सबको जिन्दगी में रोशनी और इंसाफ का एक नया मंजर लायेगी. है, ना माँ?

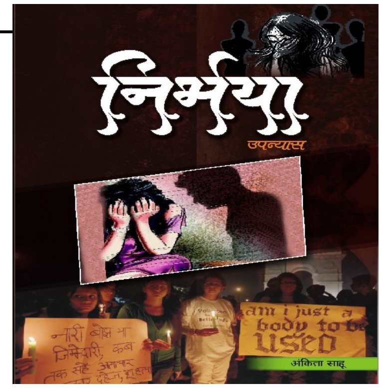

हाँ बेटी! बस अपनी बच्ची की धड़कन उसके पैरों को छुवन, उसके मौजूदगी के एहसास को याद करना और उसके कातिल को भी. कितनी भी बदनामी की उँगलियाँ तुझ पर उठे तू विचलित मत होना. देख तेरी विजय होगी. जा अब देर हो गयी है अपनी नोट्स पढ़ ले जो तुने कल के लिए तैयार की है. यशस्वी भव!
(अतुल और माँ कमरे में चले जाते है थोड़ी देर बात अपर्णा का प्रवेश होता है)
अपर्णा- निर्भया खाना खाय तूने?
हाँ अपर्णा खा लिया मैने और तू?
मैने भी.
खामोश क्यूँ हो गयी-
बस यूँ ही.....
अच्छा, अपर्णा इधर आ।. अपना हाथ दें. (निर्भया अपने पेट पर हाथ रखवाती है)
निर्भया-अपर्णा ये है तेरी भाँजी. ये तुझसे मिलना चाहती थी. देख अभी ये है नहीं अपने घर पर! कहीं गयी हैं। पता है ये बोलती थी कि मौसी और नानी से मिलवाना मगर मैं ही कहती थी कि जब तेरे पापा मुझसे शादी कर लेंगे ना तब मिलवाऊँगी. अपर्णा काश कि मैने उसकी बात मानी होती.
अर्पणा अपनी गोद में निर्भया को लिटाकर, उसका सिर सहलानें लगती है.

अगली सुबह सूरज ने जब अँगड़ाईया ली तो उसके बदन नें किरणें फैलायी और उन किरणों ने निर्भया के मन में नयी उमंग पैदा की. एक छोटा सा कदम जिसको निर्भया नें कटीले-पथरीलें रास्तो पर चलने के लिए बढ़ाया था, उस पर उसके हजारों साथी मंजिल और हक तक का फासला तय करने के लिए साथ चल पड़े. भगवान के सामने हाथ जोड़ते वक्त निर्भया ने अपने बच्चे के कातिल के लिए सजा माँगी और माँ के पांव छूते वक्त आशीर्वाद. निर्भया चल पड़ी अपने बच्चे के लिए इंसाफ माँगने और उसके साथ उसके पीछे चल पड़ा इंसानों का एक काँरवा. प्रगति, अतुल, अपर्णा, माँ, संकल्प, संस्थाएँ और इन सबके साथ था एक क्रान्तिकारी विचार और दृढ़ विश्वास. अखबार की सुर्खियों से लेकर फेसबुक तक निर्भया के समर्थक ज्यादा तादाद में हो गये तो निर्भया के पास नहीं पहुँच पायें, उन लोगों ने अपनी दुआओं को निर्भया के पास भेजा. पूरा का पूरा काँरवा पहुँच गया न्यायालय की तरफ. अन्धें कानून से खुली आँखों का विश्वास पाने बढ़ गये.

राघव अपने वकीलों के साथ टूटे-फूटे मरम्मत किये हुए गर्व, दम्भ और खोखले विश्वास के साथ वहाँ पर मौजूद था. उसके चेहरे पर एक मुस्कान पर वो मुस्कान ऐसी लग रही थी, मानों वो खुद अपने हालात पर तरस खाकर मुस्कुरा रहा हो. चोट लगी थी उसके अंदर, हिल गया था पूरी तरह से, फिर भी बाहर एक पुरूष की तरह अपने आपको सम्भालने की कोशिश करता रहा. उसके मन में केवल एक बात जो कि उसकी आखिरी उम्मीद थी कि इस अपंग हो चुकी निर्भया का केस लड़ने वाला तो कोई है नहीं तो ये जीतेगी कैसे? यही झूठ उम्मीद लेकर उसने अपनी विजय सुनिश्चित कर रखी थी.

राघव की नजरें निर्भया की नजरों से मिली तो राघव ने व्यंग्य की तीखी हँसी हँसकर उसका अपमान करना चाहा. पर निर्भया की एकटक घूरती नजरों की चमक से उसकी झूठी निगाहें चकाचौंध खा गयी. निर्भया राघव की तरफ थूकने का इशारा करते हुए, व्हील चेयर की मदद से आगे बढ़ गयी, राघव कसमसाता हुआ वहीं खड़ा रह गया. जज ने कार्यवाही शुरू करने का आदेश दिया.

राघव का वकील-माई लॉर्ड, निर्भया जिन्होंने अभी वकालत की दुनिया में कदम रखा ही है, वो अपने दो टके की हैसियत बनाने के लिए जाने-माने सम्मानित, वकालत के दुनिया के आदर्श रहे राघव सिघांनिया पर आरोप लगाने चली है. राघवजी नें इन्हें अपने अंडर में रखकर वकालत करना सिखाया, वकील बनने के गुण बताएँ, उसी को अपने जाल में फँसाकर अपने को उनके बच्चे की माँ बताकर और उसके बाद राघव को अपने पेट में पल रहे बच्चे का कातिल बताकर पूरी जनता को उनके खिलाफ खड़ा कर दिया. उसने अपने बेचारी सी औरत होने का फायदा उठाया. पर वो गलत है और इसका सबसे बड़ा सुबूत है कि उसका केस कोई नहीं लड़ा रहा है. इसलिए मैं अपने मुवक्किल राघव जी को इस मामलें में निर्दोष साबित करने की अपील करता हूँ, थैक्यू माई लार्ड.

जज-मिस निर्भया आपके पास क्या सचमुच कोई वकील नहीं है?

(निर्भया व्हील चेयर पर बैठकर पहिये को अपने हाथों के सहारें चलाकर जज के सामनें आती है और काला कोट पहनती है तो राघव के साथ-साथ वहाँ मौजूद सब भौचक्कें रह जाते है)

निर्भया- सर मैं अपना केस खुद लड़ूँगी और ये मेरी लाइफ का मेरा पहला केस भी होगा. माई लॉर्ड, मेरे द्वारा राघव पर लगाए गये सारे आरोप सही है.

राघव का वकील- माई लॉर्ड, मैं निर्भया से कुछ सवाल कटघरे में बुलाकर करना चहूँगा।

जज- इजाजत है

वकील- हाँ तो निर्भया आपका कहना है कि राघव कातिल है? ये बताइये कि कत्ल किसका हुआ है?

क्रमशः

(पूरा उपन्यास एक साथ पढ़ने के लिए सम्पर्क करें: मो0: 9335155949)

सर्दियों में स्वस्थ रहने के खास सुझाव

एंटीबायोटिक-एंटीबैक्ट्रीयल मसाले हर्बलः सर्दी मौसम में अदरक, हलसुन, लौंग, इलायची, दालचीनी, तुलसी, पुदीना, मसालों का सेवन उत्तम है. जैसे अदरक तुलसी चाय, सूप पीना, किंचन में खाने में मसालों का इस्तेमाल करना बदले मौसम में सर्दी, जुकाम, बुखार, संक्रामण, पाचनतंत्र गड़बड़ी, ठंड लगने से दूर रखने में सक्षम है. मसाले हर्बल सेवन रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का अच्छा सुरक्षित माध्यम है.

आंवला-सर्दियों में आंवला, शहद, आंवला कैंडी खाना स्वस्थ निरोग स्वास्थ्य की पहचान है. आंवला शहद् पाचन तंत्र को दुरूस्त रखने, त्वचा से सम्बन्धित विकारों दूर रखने, बालों जड़ से मजबूत, पोषण संचार और किड़नी, फेफड़े, हृदय को स्वस्थ रोगमुक्त रखने सहायक है. आंवला शहद सर्दियों में खास रक्षा कवच बनाने में सक्षम है।

पत्तेदार हरी सब्जियांः पालक, सरसों, राई, लहसुन पत्तियां, हरी सब्जियां सर्दियों में सेहत को स्वस्थ निरोग रखने में सक्षम है. हरी सब्जियां पाचन तंत्र से लेकर नजर विकार और आंतरिक शारीरिक विकारों से दूर रखने में सक्षम है.

फलों का रस/सूखे फलः सर्दियों में गाजर, अनार, मौसमी, सन्तरा, चुकन्दर, अन्नास आदि का रस सेवन करना फायदेमंद है. सर्दी मौसम में अखरोट, काजू, बादाम, छुआरे, मूंगफली, किशमिश, मेवा इत्यादि डाईफ्रूटस खाना फायदेमंद है.

गले को संक्रामण से बचायेंः सर्दी मौसम में खानपान पर खास ध्यान देना जरूरी है. तली भुनी चीजों, जंक फूड, सोड़ा पेय, आईसक्रीम, ठंडा पानी सेवन से परहेज करें. तली भुनी चीजों, जंकफूड, सोड़ा ठंड़ा पेय, आईसक्रीम, ठंड़ा पानी सेवन से सर्दी-जुकाम संक्रामण वायरल फैलने का भय ज्यादा बना रहता है.

शरीर फिटनेसः सर्दी मौसम में व्यक्ति थोड़ा आलस्य हो जाता है. सर्दी में मोटापा, चर्बी बढ़ने से बचाने के लिए और शरीर को फिट रखने के लिए रोज सैर, योगा, व्यायाम जरूरी हो जाता है।.

सीमित मात्रा में पोटिक आहारः सर्दी मौसम में खाना आसानी से पच जाता है. परन्तु ज्यादा तैलीय, प्रोटीन वाले खाद्य पदार्थों से मोटापा, वजन, अपचन, गैस, एसिडिटी का भय बना रहता है. पोष्टिक संतुलित आहार सीमित मात्रा में खायें, गुनगुना पानी पीयें.

गर्म सर्दी रोधक कपड़े पोषाकः सर्दी मौसम में शरीर को पूर्णरूप से ठंड़ी हवा, संक्रमण, वायरल से बचाने में गर्म ऊनी कपड़ों सही पूर्ण पोषाक का खास स्थान है. बच्चे बड़ों सभी को ठंड़ी हवा सर्दी लगने से बचाने जरूरी है.

सर्दी, जुकाम, खांसी उपचारः सर्दी जुकाम कोई गम्भीर बीमारी नहीं है. सर्दी जुकाम का प्रकोप लगभग ८-१० दिनों तक रहता है. सर्दी जुकाम लम्बे समय तक रहने से साइनस, टी.बी., अस्थमा, कफ जमना, एलर्जी, निमोनिया बिगड़ना, फेफड़ों में विकार जैसे समस्याऐं होने का भय बना रहता है. सर्दी जुकाम नजला खांसी ठीक करने में एंटीबायोटिक, एंटीबायरल, एंटीबैक्टीरल, गुणों वाली चीजें खाने और दवाईयां, काढ़ा तरल पदार्थ सेवन करना फायदेमंद है।

सर्दी जुकाम होने के कारणः संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क में आना, सर्द हवा, शरीर में रोगप्रतिरोधक क्षमता घटना, बाहर से आने पर ठंडा पानी पीना, ठंडी चीजों का सेवन करना, वैक्टीरिया वायरल इम्युनिटी पावर का कमजोर होना, ब्लडप्रेशर बढ़ना, तेलीय चीजें खाने बाद तुरन्त ठंड़ा पानी पीने से गला पकड़ना, रात को सर्द ओस में टहलना, धूप सेकने के तुरन्त बाद ठंड़ा पानी पीना, बदलते मौसम की बारीश में भीगने से

सर्दी जुकाम के लक्षणः छींके आना, नांक बहना, बुखार महसूस करना, सिर दर्द होना, गले में दर्द और खर्रास होना, बदन में दर्द सूजन रहना, भूख कम लगना और खाने स्वाद नहीं लगना

मुंह और गले से कफ खांसी में आना नांक, कांन, आंखें लाल होना, चेहरे त्वचा का रंग बदलना, शरीर गर्म रहना, जुकाम से आवाज गला बैठ जाना

सर्दी जुकाम से बचने के तरीके: ऊनी कपड़े, दस्ताने, टोपी, मफरल आदि गर्म कपड़े पहने, जुकाम संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क से बचें, ठंड़ हवा में जाने से बचें, हाथ साफ रखें, सर्दियों में बार-बार हाथ धोना चाहिए, बाइक चलाते समय, यात्रा करते समय कान, नांक, हाथों को ठंड सर्द हवा से बचने के लिए रूमाल, मफरल, टोपी, कनपट्टी आदि पहनें, आसपास साफ-सफाई बनायें रखें, गंदगी वातारण में वायरल संक्रमण जल्दी पनपते हैं., ठंड़ सर्द हवा में जाने से पहले नांक के निचले हिस्से, हाथों, कान पर विक्स, वायरल रोधक एन्टीबायोटिक क्रीम लगायें, विस्तर, गद्दे, तकिया को सप्ताह में १-२ बार धूप में सुखायें, जुकाम ग्रसित व्यक्ति से विस्तर, तौलिया, साबुन आदि शेयर करने से बचें, ठंडी चीजों के सेवन से बचें, ताजा भोजन करें, वासी भोजन खाने से बचें.

सर्दी जुकाम में घरेलू इलाजः काढा सेवनः अदरक और लहसुन को बारीक पीसकर शहद के साथ घोलकर सुबह, दोपहर, शाम सेवन करें, २.काली मिर्च, अदरक, तुलसी, लहसुन, हल्दी, काला नमक से बने गर्म काढ़ा पीये, ३. सर्दी जुकाम खांसी होने पर अदरक, इलायची से बनी हर्बल टी पीना फायदेमंद है।

गलें की खर्रास के लिए गर्राराः १. मेहंदी पत्तों के रस और नमक पानी का गर्रारा करने से गले की खर्रास दर्द सूजन से जल्दी आराम मिलता है. २. जब भी प्यास लगे गर्म गुनगुना पानी पीना फायदेमंद है. गर्म गुनगुना पानी गले मे संक्रामण वायरल को नष्ट करने और जुकाम में गला इंफेक्शन ठीक करने में सहायक है. ३. गले में दर्द, खर्रास, सूजन होने पर लहसुन को सरसों तेल में अच्छे से लाल होने तक पका कर हल्का ठंडा होने पर गले पर हलसुन तेल मिश्रण की मालिश करने से दर्द सूजन खर्राश से जल्दी छुटकारा मिलता है. ४. शहद और फुलाया सुहागा मिश्रण सेवन करने से गले की खर्रास दर्द खांसी कफ से जल्दी आराम मिलता है।

कफ बलगम मिटायें: १. सीने में बलगम जमने और खांसी कफ आने पर अंजीर, अदरक, लौंग मिश्रण सेवन करने से बलगम कफ मिटाने में फायदेमंद है. २. अदरक सौंठ पाउडर और शहद का उबला गर्म काढ़ा पीने से खांसी बलगम कफ से जल्दी आराम मिलता. ३. बलगम कफ जमने पर मुलहठी को शहद के साथ चबाकर खाने से बलगम कफ से जल्दी छुटकारा मिलता है।

भाप लेनाः

१. कफ, खांसी होने पर विक्स, लहसुन, तुलसी की भाप लेने से कफ, खांसी, नांक बन्द, गले की खर्रास से जल्दी आराम मिलता है.

२. दाल और अनाज को भून कर गंध ा धूआं सूघने से जुकाम नजला से बन्द नांक और गले की खर्रास से जल्दी आराम मिलता है. गर्म भुनी दालें चबाकर खाने जल्दी आराम मिलता है.

३. रात को सोते समय गले पर विक्स, बाम लगाकर गर्म कपड़ा लपेट कर सोने से सर्दी जुकाम से गले के दर्द, खर्रास, खांसी से जल्दी छुटकारा मिलता है। सर्दी जुकाम में गले को सर्द हवा से बचाने से सर्दी जुकाम खांसी जल्दी ठीक होने में सहायक है.

शिव महिला पृष्ठ १७ का शेष...इस सृष्टि की रचना की थीं, तभी रुद्र भी उत्पन्न हुए थे, जो शिव समान शरीर तथा भयानक बल वाले थे. वे अति-साहसी एवं विशाल आकार वाले थे, निरंतर क्रोध के कारण उनके नेत्र सर्वदा लाल रहते थे, वे चीते का चर्म पहनते थे, सर पर लम्बी-लम्बी जटाएं रखते थे। एक बार दुश्ट रूद्र ब्रह्मा जी द्वारा निर्मित इस सृष्टि को नष्ट करने उद्यत हुए, ब्रह्मा जी ने उन्हें कठोर आदेश देकर शांत किया, साथ ही मुझे आदेश दिया की भविष्य में ये प्रबल पराक्रमी रुद्र ऐसा उपद्रव न कर पायें तथा आज वे सभी मेरे वश में हैं। ब्रह्मा जी की आज्ञा से ही ये रौद्र-कर्मा रुद्र भयभीत हो मेरे वष में रहते हैं, रुद्र अपना आश्रय स्थल एवं बल छोड़ कर मेरे अधीन हो गए हैं। अब में पूछता हूँ! जिनके अंश से संभूत ये रुद्र मेरे अधीन हैं तो इनका जन्म दाता मुझ से कैसे श्रेष्ठ हो सकता हैं? सत्पात्र को अधिकृत कर दिया गया दान ही पुण्यप्रद एवं यश प्रदान करने वाला होता हैं, मेरी इतनी गुणवान और सुन्दर पुत्री को क्या मेरी आज्ञा में न रहने वाला वह शिव ही मिला था, मैंने अपनी पुत्री का दान उसे कर दिया। जब तक रुद्र मेरी आज्ञा के अधीन हैं, तब तक मेरी ईर्ष्या शिव में बनी रहेंगी।" इस तरह से दक्ष अपने मन में उत्पन्न हुए भावो को छुपा नहीं पाते है और शिव के प्रति उदासीन ही रहते है साथ ही अपनी पुत्री सती के प्रति भी उनका क्रोध बढ़ते ही जाता है। जो संसार मे घटित होने वाले सम्सत घटनाओं में परिवर्तन करने में सक्षम हैं, जो राक्षस, पिशाच से ले कर सिद्धगणों द्वरा घिरे रहते हैं (जिनके बुरे एवं अच्छे सभि अनुयायी हैं) सिद्ध, सर्प, ग्रह-गण एवं इन्द्रादिसे सेवित हैं तथा जो बाघम्बर धारण किये हुए हैं, उन शिव जी को नमस्कार करता हूँ। **क्रमशः......**

शबनम शर्मा की लघु कथाएं

हौसला

सुबह का वक्त था। जनवरी का महिना। लखनऊ की ठंड़। मैं छत पर जाकर बैठ गई। मन बहुत उदास था। मेरी बेटी मात्र ८ महिने की थी और बेटा १२ साल का। मेरे पति को फौज से रिटायरमेंट मिल गई थी। रोटी के लाले पड़ गये थे। कभी अपनी गोद में आई बेटी को देखती तो कभी मझधार में खड़े बेटे को। पति की मा
यूसी भी मुझसे देखी न जा रही थी। आगे के समय का सोच-सोचकर मन बैठा जा रहा था। मेरी उम्र ३२ बर
स की थी। ब क्या करेंगे? कैसे काटेंगे आगे का समय? यही सोचकर आँसू सूख नहीं रहे थे। अपना मकान भी न था जहाँ सिर छुपा सकें।

मेरा शरीर और मन दोनों ही परेशान थे कि बाजू वाली अम्मा जी भी छत पर कपड़े सुखाने आ गई। उन्हें मेरी पूरी परिस्थिति के बारे में खबर थी। वो मेरे पास आकर बैठ गई और बोली, ''बेटी, सोचने या रोने से कभी कोई काम नहीं होता। इसके लिये हमें सही दिशा ढूंढ़नी होगी। तू तो पढ़ी-लिखी है कुछ भी कर सकती है। जब मेरे पति मुझे छोड़ कर गये तो मेरे ५ बच्चे, बूढ़ी सास-ससुर और मैं। कैसा-कैसा समय निकाला, लोगों के स्वैटर बुने, बर्तन मांजे, घर लीपे, फिर समय मिलता तो दरियाँ बुनती। आज मेरे बच्चे बड़े हो गये हें, मैं आराम से हूँ। बेटी, वक्त कभी एक सा नहीं रहता और सुन अच्छा है ये वक्त जवानी में आया, बुढ़ापा सुखी होगा। आँसू पोंछ और सोच करना क्या हैं?'' उनकी इस बात ने मेरी सोच, जिन्दगी ही बदल दी।

रोटी

हम बहुत छोटे थे। खेलने के लिये अकसर घर से बाहर निकल जाते। उन दिनों कोई टी०वी०, विड़ियो गेम या फिर दूसरा साधन न था। इतवार का दिन था। सामने वाले के झार में काम लगा हुआ था। मिट्टी, रेत के ब
ड़े-बड़े ढ़ेर थे। हम बच्चे वहीं खेलने लगे। काफी देर खेलने के बाद हम आम के पेड़ के नीचे बैठने को आये। वहाँ पर एक मजदूर हाथ में रोटी का डिब्बा लिये आ गया व हमें वहाँ से जाने को कहने लगा।

हम शोर न मचा रहे थे न ही शरारत कर रहे थे फिर भी उसे अखर रहे थे। हम वहाँ से हट गये। सामने वा
ली दिवार के पीछे छिप गये। उसने चहुँ ओर देखा व अपनी रोटी का डिब्बा खोला। बोतल से पानी इक डिब्बे में डाला और उसमें नमक मिर्च मिलाया व रोटियाँ तोड़कर डाल दी। रोटियाँ गीली और नरम हो गई व खाने लगा। रोटी खत्म कर खुद ही बड़बड़ाया, ''बच्चों को क्या पता रोटी की कीमत, ये तो आधी खाने वाले व आधी फेंकने वालों में हैं, डर जाते मुझे पानी संग रोटी खाते देखकर।'' उनकी ये बात याद आते ही कई बार मेरा मन सिहर जाता है।

प्यास

बात उन दिनों की है जब मंड़ल कमीशन का काफी शोर था। जगह-जगह बंद चल रहे थे। इस बीच मुझे लखनऊ जाना पड़ गया। जरूरी काम था। मैं सामान समेट कर चल पड़ी। मेरे साथ मेरा ४ बरस का बेटा भी था। हम देहरादून से रवाना हुए। ट्रेन रात को साढ़े आठ बजे के करीब चली। मन में एक अजीब सा डर बैठा था। २-३ जगह ट्रेन रूकी। गंतव्य तक पहुँचने में काफी लेट हो गई। मेरा बच्चा बार-बार कुछ खाने या पीने को माँग रहा था। मैंने जो कुछ सामान रखा था। लगभग खत्म हो गया था। रास्ते में कोई ट्रेन में कुछ बेचने भी न आ रहा था। उसे जोर की प्यास लगी, वो रोने लगा। मेरे पास रखा पानी भी खत्म हो गया था। मैं उसे सांत्वना दे रही थी। अभी लखनऊ आने वाला है, ठंड़ा पानी भी आएगा। पर उसकी प्यास गरमी की वजह से काफी बढ़ गई थी। मेरे सामने एक बुजुर्ग बैठे थे उन्होंने अपने झोले से (थैले से) एक पानी की बोतल निकाली व बोले, ''बेटी मैं बहुत देर से इस बच्चे को परेशान होते देख रहा हूँ, मेरे पास पानी है पर मैं मुसलमान हूँ, बता रहा हूँ, कहीं आप वहम करें, आप चाहें तो पानी पिला सकती हैं।'' मेरे से पहले मेरा बेटा बोतल पर झप
ट पड़ा, उसने गट-गट पानी पिया। मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े। मैंने कहा, ''चाचा कभी पानी भी हिन्दू या मुसलमान होता है। आपने ऐसा क्यूँ सोचा? ये तो सिर्फ प्यास बुझाता है। शुक्रिया चाचा, बहुत-बहुत शुक्रिया.

वर्ष २०१८ का भविष्यफल

-पं० शुम्भु नाथ मिश्रा

साल २०१८ आपके लिए कैसा रहेगा? क्या करें और क्या न करें, किन उपायों को करने से यह वर्ष आपके लिए बेहतर हो सकता है। ज्योतिष पर आधारित यह राशिफल आपके लिए

मेषः साल की शुरुआत ऊर्जा और संकल्प से भरपूर है. सारे वर्ष बुद्धिमानी से लिए गए निर्णय अच्छी खबर लाते रहेंगे, हालांकि पारिवारिक जीवन में कुछ तनाव मुमकिन है. आप भागदौड़ भरी दिनचर्या व खान-पान में अनियमितता के चलते असंतुष्ट और नाखुश महसूस कर सकते हैं. वर्ष के आरंभिक २ महीने स्वास्थ्य के लिहाज से बहुत बेहतर नहीं रहेंगे. कैरियर के नजरिए से यह साल आपको ऊंचाई पर ले जाएगा। आय में भी वृद्धि होने की प्रबल संभावना है। लंबी यात्राएं फलदायी साबित होंगी और अच्छे परिणाम देने वाली रहेंगी। अक्टूबर के मध्य से आय में अपेक्षाकृत कुछ कमी हो सकती है। इस दौरान आपको ज़्यादा मेहनत की जरूरत है। बच्चों की सेहत में कुछ गड़बड़ी मुमकिन है, अतः सावधानी बरतें। याद रखें, इस वर्ष वैवाहिक जीवन में अधिक समय और समर्पण की आवश्यकता है। आप दूसरों का दिल जीतने में कामयाब रहेंगे। कभी-कभी आप महसूस कर सकते हैं कि काम में आपका दिल नहीं लग रहा है, लेकिन ऐसा थोड़े समय के लिए ही होगा। कुल मिलाकर आपके लिए यह साल अच्छा रहने वाला है। **उपायः** इस वर्ष को बेहतर बनाने के लिए माता या माता सामान महिला की सेवा करें एवं नाग-नागिन का जोड़ा बहते पानी में प्रवाह करें।

वृषः इस वर्ष आपको अपनी सेहत का खास ख्याल रखने की जरूरत है। अपने स्वभाव में आक्रामकता का अनुभव कर सकते हैं, जिसका प्रभाव आप पर नकारात्मक रहेगा, आक्रामकता से बचें। धीरे-धीरे आपमें इच्छा-शक्ति का विकास होगा और किसी भी चीज को हासिल करने में इससे आपको सहायता मिलेगी। सफलता पाने के लिए आपको पूरे साल कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। संभव है कार्य में आपको कुछ निराशा हाथ लगे। अक्टूबर के बाद आर्थिक तौर पर प्रगति होगी, साथ ही आपका वैवाहिक जीवन भी अधिक सुखमय रहेगा। इस साल छोटी यात्राओं से आपको फायदा होगा। यह भी संभव है कि आप तीर्थयात्रा पर जाएं। बाल-बच्चे तरक्की करेंगे तथा उनका प्रदर्शन अच्छा रहेगा। हालांकि इस साल आप किसी भी विवाद या टकराव में फंसने से बचें। व्यर्थ के विवाद में आपको वित्तीय तौर पर हानि हो सकती है। शुरुआती दो महीनों में किसी भी तरह की कंट्रोवर्सी में पड़ने से बचें, इससे आपकी छवि को नुकसान पहुंच सकता है। हालांकि आप किसी भी तरीके की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं। स्वास्थ्य के प्रति सजगता जरूरी है। विशेषतः खान-पान का ध्यान रखें और वजन न बढ़ने दें। आप अपने जीवनसाथी या किसी धार्मिक क्रिया-कलाप पर खर्च कर सकते हैं। कुल मिलाकर २०१८ आपके लिए सामान्य रहेगा, लेकिन आपको इस वर्ष कई नई चीजें सीखने को मिलेंगी। वैवाहिक जीवन व आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष बेहतर है। काम धंधे में कुछ धीमापन रह सकता है। **उपायः** पुजारी को पीले कपड़े दान करना शुभ रहेगा।

मिथुनः मिथुन राशि के जातकों में अभिव्यक्ति की कला अन्तर्निहित होती है। यह क्षमता आपको पूरे साल मदद करेगी। हालांकि पहले महीने में आपको अपने शब्दों पर ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि शब्दों का गलत चुनाव विवाद की वजह बन सकता है। काम-काज को बढ़ाने के लिए आप घर से दूर जा सकते हैं। इससे आपको आर्थिक तौर पर फायदा होगा। इसके चलते प्रियजनों से हुई दूरी आपको बेचैन कर सकती है। इसलिए निजी और पेशेवर जीवन में सन्तुलन बनाने की आवश्यकता है। जहां तक बाल-बच्चों को लेकर मिथुन के भविष्यफल की बात है, उनका ऊधमी बर्ताव जारी रहेगा, लेकिन वे तेजी-से नई-नई चीजें सीखेंगे और विभिन्न गतिविधियों में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। यदि आपका अभी तक विवाह नहीं हुआ है और आप इसके इच्छुक हैं, तो दिसंबर के मध्य तक इच्छित साथी से शहनाई बजने के योग भी बनते नजर आ रहे हैं। साल की आखिरी तिमाही में खर्चे बढ़ सकते हैं, इसलिए जरा संभलकर जेब ढीली करें। सेहत में उतार-चढ़ाव मुमकिन है और वात

रोग, गठिया आदि के संकेत दिखाई दे रहे हैं. खान-पान में सावधानी अपेक्षित है। इस साल व्यवसाय अधिक लाभ लेकर आएगा। आपकी पेशेवर सफलता की बुनियाद आपके द्वारा किया गया परिश्रम ही रखेगा। सार यह है कि इस वर्ष आपको उन्नति और सफलता के कई मौके मिलने वाले हैं। काम धंधो के लिए साल अनुकूल है। **उपायः** गरीबों में गुलाब जामुन का वितरण करना चाहिए।

कर्कः पूरे वर्ष आप उत्साह से लबरेज रहेंगे और दूसरों को नेतृत्व प्रदान करने के इच्छुक होंगे। हो सकता है कि इस साल आपके कुछ प्रियजन आपको ठीक-से नहीं समझें और इसके चलते रिश्तों में तनाव आ सकता है। पारिवारिक जीवन सौहार्दपूर्ण रहेगा। छोटी-मोटी नोंक-झोंक को नकारा नहीं जा सकता है। आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और कार्यक्षेत्र में आपका सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक तौर पर भी २०१८ में आपका यश फैलेगा। इस साल आपका पूरा ध्यान सेहत के ऊपर होना चाहिए, क्योंकि संक्रामक रोगों की चपेट में आने की संभावना है। वैवाहिक जीवन में थोड़ा असंतोष महसूस हो सकता है। इस दौरान तल्ख वाद-विवाद से बचने में ही समझदारी है। खर्चों में काफी इजाफा हो सकता है। हालांकि कमाई ठीक होगी, लेकिन खर्चों पर लगाम लगाने की जरूरत बनी रहने वाली है। ऐसा न होने पर आर्थिक रूप से काफी दिक्कतें आ सकती हैं। विद्यार्थी इस दौरान अच्छा प्रदर्शन करेंगे और बच्चों की संकल्प-शक्ति में वृद्धि होगी। आप आरामदेह जीवन का आनंद उठाएंगे, क्योंकि पूरे साल आपकी सोच के केन्द्र में सुख-सुविधाएँ रहने वाली हैं। इसके लिए आप कठिन परिश्रम भी करेंगे। कुल मिलाकर यह साल आपके लिए बढ़िया है, लेकिन कुछ चुनौतियों का सामना भी आपको करना पड़ सकता है। व्यापार की तुलना में नौकरी के लिए साल अच्छा रहेगा। **उपायः** मां दुर्गा की पूजा अर्चना हितकर रहेगी।

कर्कः पूरे वर्ष आप उत्साह से लबरेज रहेंगे और दूसरों को नेतृत्व प्रदान करने के इच्छुक होंगे। हो सकता है कि इस साल आपके कुछ प्रियजन आपको ठीक-से नहीं समझें और इसके चलते रिश्तों में तनाव आ सकता है। पारिवारिक जीवन सौहार्दपूर्ण रहेगा। छोटी-मोटी नोंक-झोंक को नकारा नहीं जा सकता है। आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और कार्यक्षेत्र में आपका सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक तौर पर भी २०१८ में आपका यश फैलेगा। इस साल आपका पूरा ध्यान सेहत के ऊपर होना चाहिए, क्योंकि संक्रामक रोगों की चपेट में आने की संभावना है। वैवाहिक जीवन में थोड़ा असंतोष महसूस हो सकता है। इस दौरान तल्ख वाद-विवाद से बचने में ही समझदारी है। खर्चों में काफी इजाफा हो सकता है। हालांकि कमाई ठीक होगी, लेकिन खर्चों पर लगाम लगाने की जरूरत बनी रहने वाली है। ऐसा न होने पर आर्थिक रूप से काफी दिक्कतें आ सकती हैं। विद्यार्थी इस दौरान अच्छा प्रदर्शन करेंगे और बच्चों की संकल्प-शक्ति में वृद्धि होगी। आप आरामदेह जीवन का आनंद उठाएंगे, क्योंकि पूरे साल आपकी सोच के केन्द्र में सुख-सुविधाएँ रहने वाली हैं। इसके लिए आप कठिन परिश्रम भी करेंगे। कुल मिलाकर यह साल आपके लिए बढ़िया है, लेकिन कुछ चुनौतियों का सामना भी आपको करना पड़ सकता है। व्यापार की तुलना में नौकरी के लिए साल अच्छा रहेगा। **उपायः** मां दुर्गा की पूजा अर्चना हितकर रहेगी।

सिंहः इस वर्ष धार्मिक और आध्यात्मिक क्रिया-कलापों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। मुमकिन है कि इस दौरान आप तीर्थयात्रा पर भी जाएं। जनवरी-फरवरी में भाई-बहन में किसी की तबियत बिगड़ सकती है, पराक्रम में बढ़ोत्तरी होगी, प्रेम-संबंधों में मिश्रित फल प्राप्त होने वाले हैं। एक तरफ कुछ गलतफहमी होना मुमकिन है, वहीं दूसरी तरफ अपने प्रिय के साथ संबंधों की ताजगी भी महसूस कर सकते हैं। आपके कर्म आपको सफलता की राह पर ले जाएंगेय हालांकि आपको आलस्य से दूर रहने की जरूरत है। वैवाहिक जीवन में सुख की वृद्धि होगी। इस वर्ष आप अनुभव कर सकते हैं कि आपका जीवन आगे की ओर तेजी-से बढ़ रहा है और अलग-अलग तरह के हालात आपकी राह में आ रहे हैं। आर्थिक तौर पर आप प्रगति करेंगे। बच्चों को ज़्यादा मेहनत करने की जरूरत है। आपको बच्चों का खास ख़्याल रखना पड़ेगा और उनके उद्देश्यों की प्राप्ति में उनकी सहायता करनी पड़ेगी। आपके लिए विदेश-यात्रा के योग भी नजर आ रहे हैं। जनवरी-फरवरी में गर्भवती महिलाओं को सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अक्टूबर के मध्य से पारिवारिक व पेशेवर जीवन में सकारात्मक चिह्न दिखाई देने लगेंगे। सामाजिक तौर पर प्रतिष्ठा में भी इस वर्ष वृद्धि होगी। आमदनी में बढ़ोत्तरी सम्भावित है। प्रेम के लिए साल औसत हैं लेकिन वैवाहिक मामलों के लिए साल अनुकूल रहेगा। कार्यक्षेत्र में कुछ बदलाव संभावित है। **उपायः** शिव चालीसा का पाठ करें।

.....शेष अगले अंक में